कमल संदेश
ikf{kd if=dk

संपादक

प्रभात झा, सांसद

कार्यकारी संपादक

डॉ. शिव शक्ति बक्सी

सहायक संपादक

संजीव कुमार सिन्हा

संपादक मंडल सदस्य

सत्यपाल

कला संपादक

धर्मेन्द्र कौशल
विकास सैनी

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : **100/-**
त्रि वार्षिक : **250/-**

संपर्क

InL;rk : +91(11) 23005798
Qksu (dk-) : +91(11) 23381428
QSDl : +91(11) 23387887
पता : डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी-66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली-110003

ई-मेल
kamalsandesh@yahoo.co.in

प्रकाशक एवं मुद्रक : डॉ. नन्दकिशोर गर्ग द्वारा डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, के लिए एक्सेलप्रिंट, सी-36, एफ.एफ. कॉम्पलेक्स, झण्डेवालान, नई दिल्ली-55 से मुद्रित करा के, डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी-66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली-110003 से प्रकाशित किया गया। सम्पादक - प्रभात झा

विषय-सूची

आवरण कथा : गुजरात विधानसभा चुनाव परिणाम

विचारधारा और विकास के गठजोड़ की जीत.. 15

गुजरात चुनाव से कांग्रेस सबक ले
जवाहरलाल कौल.. 23

गुजरात के मतदाता जातिवाद के चक्कर में नहीं फंसे
वेद प्रताप वैदिक.. 24

जीता विकास मॉडल
राजीव कुमार.. 24

मिलकर आगे बढ़ें
फिरोज बख्त अहमद.. 25

गुजरात का संदेश
-प्रशांत मिश्र.. 26

श्री अटल बिहारी वाजपेयी के जन्मदिवस पर विशेष

देशभक्ति और राष्ट्रवाद के प्रहरी
जस्टिस डॉ. एम. रामा जॉइस.. 6

उदारता, प्रामाणिकता, नैतिकता जिनके जीवन के अभिन्न अंग हैं
प्रभात झा.. 8

लेख

छल-कपट की राजनीति
-बलबीर पुंज.. 12

श्रद्धांजलि

नित्यानन्द स्वामी, पं. रविशंकर.. 30

ऐतिहासिक चित्र

समर्पणः गुजरात के बाढ़ पीड़ितों की मदद के लिए कुशाभाऊ ने अपने सभी शाल नीलाम कर दिये.

निरर्थक ज्ञान

ऐसे ज्ञान का कोई लाभ नहीं, जिसके साथ बुद्धि और विवेक न हो। इसे समझाने के लिए श्री गुरुजी ने एक बार यह कथा सुनायी। रामकृष्ण परमहंस ने अपने शिष्यों से वार्तालाप में एक बार बताया कि ईश्वर द्वारा बनायी गयी इस सृष्टि के कण-कण में परमेश्वर का वास है। अतः प्रत्येक जीव के लिए हमें अपने मन में आदर एवं प्रेम का भाव रखना चाहिए।

एक शिष्य ने इस बात को मन में बैठा लिया। कुछ दिन बाद वह कहीं जा रहा था। उसने देखा कि सामने से एक हाथी आ रहा है। हाथी पर बैठा महावत चिल्ला रहा था – सामने से हट जाओ, हाथी पागल है। वह मेरे काबू में भी नहीं है। शिष्य ने यह बात सुनी; पर उसने सोचा कि गुरुजी ने कहा था कि सृष्टि के कण-कण में परमेश्वर का वास है। अतः इस हाथी में भी परमेश्वर होगा। फिर वह मुझे हानि कैसे पहुँचा सकता है ? यह सोचकर उसने महावत की चेतावनी पर कोई ध्यान नहीं दिया। जब वह हाथी के निकट आया, तो परमेश्वर का रूप मानकर उसने हाथी को साष्टांग प्रणाम किया। इससे हाथी भड़क गया। उसने शिष्य को सूंड में लपेटा और दूर फेंक दिया। शिष्य को बहुत चोट आयी। वह कराहता हुआ रामकृष्ण परमहंस के पास आया और बोला – आपने जो बताया था, वह सच नहीं है। यदि मुझमें भी वही ईश्वर है, जो हाथी में है, तो उसने मुझे फेंक क्यों दिया ? परमहंस जी ने हँस कर पूछा – क्या हाथी अकेला था ? शिष्य ने कहा – नहीं, उस पर महावत बैठा चिल्ला रहा था कि हाथी पागल है। उसके पास मत आओ। इस पर परमहंस जी ने कहा – पगले, हाथी परमेश्वर का रूप था, तो उस पर बैठा महावत भी तो उसी का रूप था। तुमने महावत रूपी परमेश्वर की बात नहीं मानी, इसलिए तुम्हें हानि उठानी पड़ी।

कथा का अभिप्राय यह है कि बड़ों की बात में निहित विचार को ग्रहण करना चहिए। केवल शब्दों को पकड़ने से काम नहीं चलता।

–'श्री गुरुजी बोधकथा' से साभार

व्यंग्य चित्र

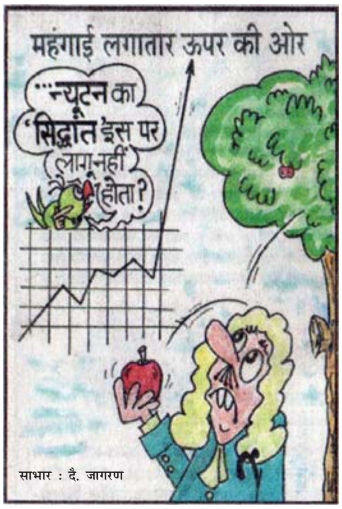

साभार : दै. जागरण

साभार : जनसत्ता

कमल संदेश के सभी सुधी पाठकों को

नव वर्ष 2013

की हार्दिक शुभकामनाएं!

सम्पादकीय

गुजरात की जीत से पूरा देश आह्लादित

गुजरात में लगातार पांचवीं बार भाजपा की सरकार का बनना और उसमें भी तीसरी बार श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में हैट्रिक लगना; सच में गुजरात की जनता का भाजपा और श्री नरेन्द्र मोदी के प्रति असीम प्यार का द्योतक है। यह जीत नहीं, महाजीत है। पूरे देश की नजर गुजरात के विधानसभा चुनाव पर टिकी हुई थी। विरोध कम नहीं था। विरोध सहने की अटूट क्षमता ईश्वर ने श्री नरेन्द्र मोदी को दी है। लोग जितना विरोध करते हैं वे उतने ही प्रभावशाली बनकर मैदान में उतरते हैं। विरोधियों ने क्या नहीं किया पर लोकतंत्र में जनमत का अपना विशिष्ट महत्व होता है। गुजरात के जन-जन के स्वर में भाजपा और श्री नरेन्द्र मोदी थे। अत: ऐसे मंगल अवसर पर भला कौन ऐसा होगा जो श्री नरेन्द्र मोदी को बधाई नहीं देगा! नरेन्द्र मोदी जी, शत-शत बधाई! आपके साथ गुजरात की जनता को बधाई! झूठ की खेती करने वालों के बीच सच की फसल काटना, परिपक्व लोकतंत्र की परिभाषा को परिभाषित करता है। गुजरात की जनता परिपक्व नागरिक है, गुजरात के परिणाम से यह प्रमाणित हो गया है। केवल भाजपा ही नहीं, समूचे देश में श्री नरेन्द्र मोदी वर्तमान भारतीय राजनीति में एक कुशल प्रशासक के रूप में उभर कर आए हैं, वे न केवल एक जननेता के रूप में उभरे हैं, बल्कि स्थापित हुए हैं। वे परिणामरूपी व्यक्तित्व हैं। परिणाम आने के बाद अपनी मां के चंदन-वदन करना तो समझ में आता है पर गुजरात भाजपा के भीष्म पितामह, जो लगातार श्री नरेन्द्र मोदी के विरोधी रहे हैं, यहां तक कि इस बार तो केशुभाई ने भाजपा छोड़ नई पार्टी बना ली, का चरण-वंदन कर उनका आशीर्वाद लेना, सच में नरेन्द्र मोदी के मन की विशालता को दर्शाता है।

गुजरात के परिणाम के बाद अब मीडिया के उन लोगों को, जो गत दस वर्षो से श्री नरेन्द्र मोदी के खिलाफ एकसूत्री कार्यक्रम चलाए हुए हैं, उन्हें समझना चाहिए जो समाचार-पत्र जमीनी सच्चाई से दूर होकर लिखते हैं या जो चैनल सच को निगलने की कोशिश करते हैं उनसे जनता के बीच तात्कालिक भ्रम पैदा किया जा सकता है पर स्थायी नहीं। अगर जमीन पर विकास की गाथा नहीं लिखी गयी होती तो शायद गुजरात में जो आज परिणाम आए हैं वैसा नहीं आता। चुनाव परिणाम के बाद पूरे देश में खुशी की लहर दौड़ी है। यह खुशी प्रायोजित नहीं है, न सुविचारित है। यह स्वप्रेरणा की खुशी है। गुजरात भाजपा की विचारधारा का एक अभिनव पाठशाला बन गया है। अब धीरे-धीरे इस पाठशाला की तर्ज पर भाजपा को अपने कार्य की विस्तार उन प्रांतों में भी करना चाहिए, जहां हमारा काम अभी बढ़ना बाकी है।

गुजरात की जीत ने हिमाचल की हार का दर्द दूर कर दिया। हालांकि हिमाचल जीतते तो सोने पर सुहागा हो जाता। पर कहीं न कहीं अपनी ही कमजोरी से हम वहां सत्ता में आने से वंचित हो गए हैं। हम सभी को हिमाचल की हार की पड़ताल करनी होगी। हालांकि हिमाचल का इतिहास रहा है कि अभी तक दूसरी बार किसी ने सरकार नहीं बनाई पर आनेवाले दिनों में भाजपा को अब हिमाचल चुनाव की भी रणनीति बनानी होगी।

लोकतंत्र में जन-जन की भावना समझना, कार्यकर्ताओं को तैयार रखना, यह एक अहम कार्य होता है। नरेन्द्र भाई मोदी के साथ एक अच्छी बात है कि वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक रहे हैं। गुजरात भाजपा के संगठन मंत्री रहे, साथ ही भाजपा के राष्ट्रीय मंत्री रहे। इतना ही नहीं वे राष्ट्रीय महामंत्री (संगठन) भी रहे। वे संगठन की गरिमा और सरकार चलाने का सर्वोत्तम हुनर जानते हैं। राजनीति में आई वर्तमान विकृतियों से वे कोई समझौता नहीं करते। भ्रष्टाचारमुक्त शासन और सुशासन का अनुपम मेल गुजरात में देखा जा रहा है। विकास, गुजरात और नरेन्द्र मोदी एक दूसरे के पर्याय हो गए हैं।

गुजरात की जीत देश की जनभावना का प्रतीक बनकर उभरी है। जीत की खुशी से सिर्फ गुजरात ही नहीं, बल्कि जिस केरल में भाजपा के पास एक भी सीट नहीं है और जिस प. बंगाल में पार्टी का भविष्य कठिन है, वहां भी जनता ने खुशियां मनाई हैं। श्री नरेन्द्र मोदी ने भारत की राजनीति में अपना एक विशिष्ट स्थान बनाया है। उनकी विशिष्टता है कि वे गाहे-बगाहे प्रदेश और देश को अपने बारे में सोचने के लिए सदैव मजबूर करते हैं। ■

अटल बिहारी वाजपेयी देशभक्ति और राष्ट्रवाद के प्रहरी

जस्टिस डॉ. एम. रामा जॉइस

श्री अटल बिहारी वाजपेयी का जन्म 25 दिसम्बर को हुआ था। वह इस महान राष्ट्र के सबसे लोकप्रिय प्रधानमंत्री रहे, जो उन्हें पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के बाद दूसरे स्थान पर रखता है। उन्होंने जीवंत राष्ट्रवाद का प्रतिनिधित्व किया। मैं सदैव इसके लिए उनकी प्रशंसा करता रहूंगा। वाजपेयी जी अपनी ज्वलंत देशभक्ति, दृढ़ राष्ट्रवाद और जबरदस्त भाषणों के बारे में प्रसिद्ध रहे हैं। मुझे उनके कुछ सार्वजनिक भाषणों को हिन्दी से कन्नड़ में अनुवाद करने का अवसर मिला है। मैं इस लेख के माध्यम से उनके जन्मदिवस पर अपना नमन प्रस्तुत करता हूं। मैं उन्हें जनसंघ की स्थापना के समय से ही जानता हूं और मैं भारतीय जनसंघ की शिमोगा नगर शाखा का प्रथम मंत्री बनाया गया था।

किन्तु उनसे मेरा निजी सम्पर्क उस समय और बढ़ा जब आपातकाल की घोषणा के बाद वे सर्वश्री मधु दण्डवते, लालकृष्ण आडवाणी और श्यामनंदन मिश्रा के साथ बंगलौर में गिरफ्तार किए गए थे, तब वे सभी संसदीय समिति की बैठक में भाग लेने बंगलौर आए थे। तब मैं कर्नाटक उच्च न्यायालय में एडवोकेट के रूप में प्रेक्टिस कर रहा था और मुझे उन सभी चार व्यक्तियों की तरफ से बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका फाइल करने का ऐतिहासिक अवसर मिला था, जिन्हें आंतरिक सुरक्षा अनुरक्षण अधिनियम के अन्तर्गत इस आधार पर हिरासत में ले लिया गया था कि सभी उक्त नेता राज्य की सुरक्षा के लिए खतरा हैं। मैंने श्री एम.सी. छागला से सम्पर्क कर उनसे कर्नाटक उच्च न्यायालय में याचिकाकर्ताओं की तरफ से सीनियर एडवोकेट के रूप में पेश होने का अनुरोध किया था, जिसे उन्होंने तुरंत स्वीकार कर लिया। केस की सुनवाई श्री एम.सी. छागला के जन्म दिवस पर रखी गई थी, फिर भी वे मुम्बई से बंगलौर आए और केस पर बहस की। उन्होंने अपनी पहले निवेदन में कहा ''माई लार्ड अटल बिहारी वाजपेयी तथा तीन अन्य नेताओं को इस आधार पर हिरासत में लिया गया है कि वे देश की सुरक्षा के लिए खतरा है'', और उन्होंने तीन बार अपने माथे को पीटा। कोर्ट-हाल पूरी तरह से आंगतुकों से खचाखच भरा था। कोर्ट को भरोसा दिलाने के लिए याचिकाकर्ताओं की ओर से केवल एक वाक्य कहना ही पर्याप्त होगा कि उनकी हिरासत लज्जाजनक रूप से अवैध है। लोग उनकी हिरासत की अवैधता तथा उनकी हिरासत का आधार देखकर आश्चर्यचकित थे।

उच्च न्यायालय ने केन्द्र सरकार द्वारा उठाए गए रिट याचिका की पोषणीयता की आपत्तियों को खारिज कर दिया। दुर्भाग्य से उक्त जजमेंट को सुप्रीम कोर्ट ने विख्यात जजमेंट शिवकण्ठ शुक्ला केस में उलट दिया था। पूरा देश उस जजमेंट से अंधकार में डूब गया था। परन्तु कुछ महीनों बाद आपातकाल उठा लिया गया और लोकसभा के चुनाव फरवरी-मार्च 1977 में कराए गए। तब मात्र दो महीने पहले ही जनता पार्टी के नाम से बनाये गए एक राजनैतिक दल को विजय मिली, जिसे जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में बनाया गया था और अत्यंत शक्तिशाली कांग्रेस बुरी तरह से हारी। मोरारजी देसाई को भी इन्हीं आधारों पर हिरासत में लिया गया था और वे प्रधानमंत्री बने। जून 1975 में राज्य के लिए सुरक्षा को खतरा होने के आधार पर जिन चार नेताओं को हिरासत में लिया गया, उनमें से तीन यूनियन केबिनेट में मंत्री बने। उस दिन मैं दिल्ली में अटलजी के साथ ठहरा हुआ था और मुझे अशोक हॉल, राष्ट्रपति भवन में नई केबिनेट के समारोह में शपथ ग्रहण के अवसर पर भाग लेने का सौभाग्य मिला था। अटल बिहारी जी विदेश मंत्री बने और विदेश मंत्री के रूप में उनका कार्य असाधारण रहा था। काश, यह सरकार अपनी पूर्ण अवधि पूरी कर पाती तो देश की पूरी तस्वीर ही बदली और चमकती नजर आती। परन्तु दुर्भाग्य से कुछ छद्म-सेक्युलरवादियों की अन्तर्कलह के कारण सरकार गिर गई और देश को राजनैतिक असफलता का सामना करना पड़ा।

किन्तु 1999 के लोकसभा के आम चुनाव में भाजपा अकेली सबसे बड़ी पार्टी बन कर आई और अटल बिहारी वाजपेयी प्रधानमंत्री बने तथा अनेक विभिन्न राजनैतिक दलों की राजग सरकार का सफलतापूर्वक नेतृत्व किया। वाजपेयी जी ने वास्तविक सेक्युलरिज्म पर दृढ़ता से डटे रहे। उन्होंने सदा ही पश्चिमी देशों और भारत की सेक्युलरिज्म की

अवधारणा पर कहा कि ये अवधारणा एकदम विशिष्ट और पृथक हैं। उन्होंने कहा कि पश्चिमी देशों का सेक्लुलरिज्म चर्च का राजनैतिक शासकों की प्रभुता की प्रतिक्रिया और विरोध के फलस्वरूप पैदा हुआ, जब कि भारत का सेक्युलरिज्म हमारे राजधर्म का भाग है, जैसा कि हम प्राचीन भारत के संवैधानिक नियमों के राजधर्म के निम्नलिखित पद में देखते हैं :

यथासर्वाणिभूतानि धरा धारयतेसमम्।
तथासर्वाणिभूतानिबिभ्रतः पार्थिवंव्रतम्।।

जिस प्रकार से मातृभूमि सभी मानव प्राणियों को हर प्राणी को बराबर का समर्थन प्रदान करती है, उसी तरह से किसी सम्राट (राज्य) को बिना किसी भेदभाव के सभी को समर्थन प्रदान करना चाहिए (मनुस्मृति X-311)

पाषण्डनैगमश्रेणीपूगव्रातगणादिषु।
संरक्षेत्समयंराजादुर्गेजनपदेतथा।।

(नारद स्मृति- देखिए धर्मकोष- पृ. 870 में निहित)

सम्राट (राज्य) को वेदों में विश्वासियों (नैगम) तथा वेदों में अविश्वासियों (पाखण्ड) के संघों तथा अन्य के साथ किए गए समझौतों का संरक्षण ठीक उसी प्रकार से करना चाहिए जैसे कि वह अपने दुर्ग और क्षेत्र की रक्षा करने के लिए अपना कर्त्तव्य समझता है।

इस देश में इन सर्वश्रेष्ठ प्राचीन प्रावधानों से पता चलता है कि कहां वेदों को परमोत्कृष्ट माना जाता है, तब भी वेदों में अविश्वासियों का भी सम्मान और संरक्षण किया जाता है।

वाजपेयी जी का विचार रहा है कि यह सेक्युलिरिज्म भारतीय छाप का है और इसका पूरी तरह पालन किया जाना चाहिए। वाजपेयी जी और भाजपा इस बात में दृढ़ और गम्भीरतापूर्वक विश्वास करती है और इन्हीं पदचिह्नों पर चलती है। परन्तु, दुर्भाग्य से तथाकथित सेक्युलरिस्ट ऐसे हैं जो साम्प्रदायिक आधार पर सोचते हैं और कार्य करते हैं फिर भी वे अपने को 'सेक्युलर' होने का नाम देकर साम्प्रदायिक रूप से आचरण कर अपने को वास्तविक सेक्युलरिस्ट कहते हैं, जिसे भारतरत्न सी. सुब्रह्मण्यिन ने 'राजनैतिक अस्पृश्यता' का नाम निम्न शब्दों में उद्धृत किया है :-

''जब भारत का संविधान 26 नवम्बर 1949 से लागू हुआ तो अस्पृश्यता की घृणित सामाजिक व्यवस्था समाप्त कर दी गई। अनुच्छेद 17 में कहा गया है कि अस्पृश्यता समाप्त कर दी गई और किसी भी रूप से इसका आचरण निषेधकारी होगा। 'अस्पृश्यता' से उत्पन्न किसी भी आवश्कता को लागू करना कानून के अनुसार दण्डनीय अपराध होगा।'' जहां कहीं भी किसी भी रूप में अस्पृश्यता का कोई अवशेष होगा तो उसे समाप्त करने के लिए कठोर कार्रवाई की जाएगी। यह विषय अब बहस का नहीं रह गया है। फिर भी, एक दूसरे प्रकार की अस्पृश्यता हमारी राजव्यवस्था में फैलने लगी है, जिसका नाम है ''राजनैतिक अस्पृश्यता।'' यह मुख्य रूप से सेक्युलरिज्म की अवधारणा पर आधारित है, हालांकि प्रत्येक राजनैतिक दल का अपना विचार रहता है कि किसे 'एंटी-सेक्युलर' अर्थात् सेक्युलर विरोधी माना जाए। जो पार्टियां सेक्युलर होने का दावा करती है, वे भाजपा और उनके सहयोगी दलों को राजनैतिक रूप से अस्पृश्य मानती हैं। अलग कारणों से, वामपंथी इण्डियन नेशनल कांग्रेस को अस्पृश्य समझते हैं। इस आधार पर अस्पृश्यता की एक और अवधारणा है कि राजनैतिक पार्टी की नीति जन-विरोधी है, जो एक और ऐसा अस्पष्ट सा शब्द है जिसे विशेष रूप से कम्युनिस्ट पार्टियां और उनके सहयोगी दल इस्तेमाल किया करते हैं। किसी पार्टी या किसी नीति को जन-विरोधी कहने का रवैय्या कुछ ऐसी बातों से उभरता है, जिसे मैं राजनैतिक कट्टरवाद का नाम देना चाहूंगा। कोई पार्टी या कोई व्यक्ति, जो किसी अपनी राजनैतिक या आर्थिक विचारधारा से सहमत नहीं होता है तो उसे जन-विरोधी या सेक्युलर-विरोधी नाम दिया जाता है।'' वास्तव में, पूरे देश के संस्कार चिरंतन काल से सेक्युलर रहे हैं, जैसा कि ऊपर बताया गया है और ऐसा भविष्य में भी रहेगा। यह हमारे राजधर्म में आस्था का विषय और आधारभूत ढांचा है, यह प्राचीन भारत का संवैधानिक नियम है और यह, चाहे जो भी राजनैतिक नेता हो या जो भी। पार्टी सत्ता में आए, निरन्तर चलता ही रहेगा। मजहब, क्षेत्र, जाति चाहे जो भी हो, हर्ष का अधिकार हमारे राष्ट्र का वह विचार है जिसे स्वर्णिम अक्षरों में निम्न प्रकार से लिखा गया है।

प्रजासुखे सुखं राज्ञः प्रजानां च हिते हितम्।
नात्मप्रियं हितं राज्ञः प्रजानां तु प्रिय हितम्।।

''लोगों के हर्ष में ही सम्राट (शासक) की खुशी रहती है, सम्राट (शासक) का कल्याण जन का कल्याण है, जो कुछ भी शासक के अपने हित में होता है, वह अच्छा नहीं समझा जाता है, परन्तु जो कुछ भी जन के हित में होता है, उसे ही शासक अपने हित में अच्छा समझते हैं।''

कौटिल्य अर्थशास्त्र पृ. 39-P42.एस (300 ई. पू.)

जितनी जल्दी सेक्युलर और नॉन-सेक्युलर के रूप में लोगों का विभाजन खत्म हो जाए, उतना ही अच्छा है। अतः ऐसी कुछ पार्टियां जो राजनीति से प्रेरित होकर इस तरह का प्रचार करती है, वे स्वयं तो सेक्युलर हैं, परन्तु अन्य पार्टियां, जो 'राष्ट्रवाद' का दृष्टिकोण रखती हैं, वे नॉन-सेक्युलर हैं, इस सम्बन्ध में जबर्दस्त राष्ट्रीय अभियान चलाने की आवश्यकता है। ■

उदारता, प्रामाणिकता, नैतिकता जिनके जीवन के अभिन्न अंग हैं

प्रभात झा

25 दिसम्बर। यह ऐतिहासिक दिन है। इस वर्ष यह श्री अटल बिहारी वाजपेयी का 89 वां जन्मदिन है। वे भारत भ्रमण पर नहीं, गत चार वर्षों से बिस्तर पर हैं। उनकी अद्वितीयता का इससे बड़ा उदाहरण और क्या हो सकता है कि सारा देश इस बात का इंतजार कर रहा है कि काश अटलजी बिस्तर से उठकर देशभ्रमण पर फिर लौट आते। भारत को अटलजी की बेहद जरूरत है। आज कोई दूसरा अटल बिहारी वाजपेयी भारतवर्ष में नहीं है। भारत में कोई शख्स ऐसा नहीं हुआ, जो आज किसी को दिखाई रहा हो, बल्कि सब उन्हें अपने मन की आरती से स्मरित करते रहते हैं। अटलजी, हम सभी भगवान से प्रार्थना कर रहे हैं और हमारी प्रार्थना अगर भगवान सुन ले तो भारत की राजनीति को उदारता, प्रामाणिकता, नैतिकता, जीवटता, सरलता, आधुनिकता, प्राचीनता, आध्यात्मिकता सहित अनेक पहलुओं पर विचार करने का मौका मिल जाता है। अटलजी शरीर से एक हैं पर उनके शरीर में गुणों का अम्बार है। वे अध्ययन के एवरेस्ट की चोटी पर हैं। मानवता के पुजारी हैं। सरस्वती उनकी जिह्वा पर है। आज भी सारा देश अटलजी के बारे में सोचता है तो उनके भाषण की गर्जना कानों में गूंजने लगती है। उनके भाषण के लय, छंद, अलंकार, उतार-चढ़ाव, भावभंगिमा, स्वर का ऊपर-नीचे होना, सब आंखों के सामने चलते-फिरते चलचित्र की तरह सहज आने लगता है। उनके परिवेश में और भेष में दो टूक भारतीयता दिखती है। पिता श्री कृष्ण बिहारी वाजपेयी और मां श्रीमती कृष्णा वाजपेयी के संस्कारों में पले, गालव ऋषि की भूमि और जहां ग्वाला बनकर भगवान श्रीकृष्ण अपने जीवनकाल में गाय चराते थे उस पवित्र भूमि ग्वालियर में पैदा हुए अटलजी के बिना जब लोग संसद जाते हैं तो संसद सूना लगता है। संसद की गलियारों में स्थित श्री लालकृष्ण आडवाणी का कक्ष और उसके बाहर लगी एक नामपट्टिका और उस पर लिखा हुआ राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के अध्यक्ष श्री अटल बिहारी वाजपेयी को लोग देखकर अंदर चले जाते हैं। झांकते हैं, वहां खड़ा एक व्यक्ति कहता है अटल जी नहीं, आडवाणी जी बैठे हैं। वह चौंकता है और अंदर जाता है। आडवाणी

जब अटलजी प्रधानमंत्री नहीं बने थे तब देश में यह बात चल पड़ी थी कि अटलजी को तो प्रधानमंत्री होना चाहिए। प्रधानमंत्री अटलजी बनें, यह भावना वर्षों से देश में चली आ रही थी। भारत में कोई नेता ऐसा नहीं हुआ जिसे विपक्ष में देखते-देखते लोग भविष्य का प्रधानमंत्री मानने लगे और लोगों के दोनों हाथ ऊपर उठने लगे और यह दुआ करने लगे कि अटलजी भारत के प्रधानमंत्री बनें।

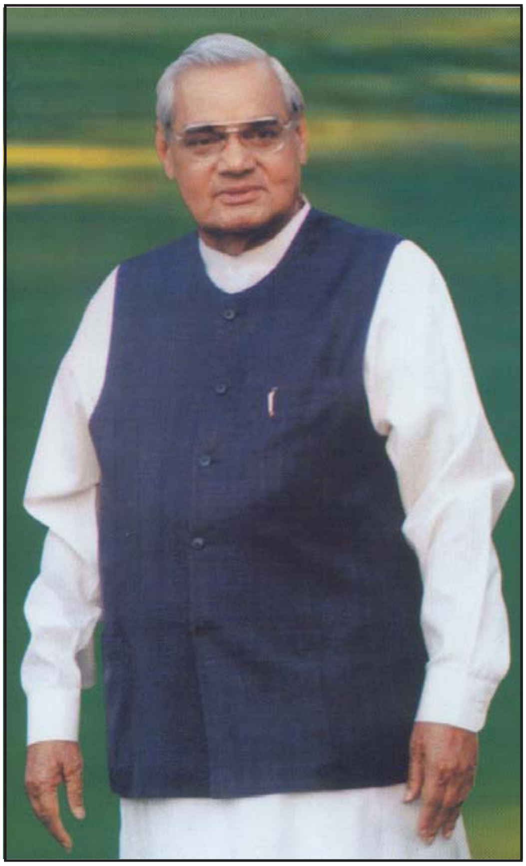

जी से अटलजी के हाल पूछता है। आडवाणीजी स्तब्ध रह जाते हैं और मन को भारी कर कहते हैं कि अटलजी स्वस्थ नहीं हैं। भारतीय राजनीति की पटरी पर जनसंघ से लेकर भाजपा के इंजन पर दो लोग वर्षों तक सवार रहे। एक अटल जी, दूसरे आडवाणी जी। राम-लक्ष्मण की जोड़ी। बेजोड़ जोड़ी। यह जोड़ी भारत के हर शहर में, हर जिलों में सदैव जाती रही। आज जब आडवाणीजी जाते हैं तो लोग चर्चा करते हैं अटलजी कहां हैं? अटलजी के बीमार होने का असर कहीं न कहीं आडवाणीजी पर पड़ा है। अटलजी जनसंघ से लेकर भाजपा के ऐसे अनथक यात्री रहे, जिसे देखकर कार्यकर्ताओं की बांछें खिल जाती थीं, स्वयं गौरवान्वित होने लगता था। शरीर में साहस का संचार होने लगता था। जिस व्यक्तित्व से सामने वाले व्यक्ति के शरीर में रक्त संचारित होने लगे और रक्त पर प्रभाव पड़ने लगे, सच में वह व्यक्तित्व तो पूजनीय ही होगा।

जब अटलजी प्रधानमंत्री नहीं बने थे तब देश में यह बात चल पड़ी थी कि अटलजी को तो प्रधानमंत्री होना चाहिए। प्रधानमंत्री अटलजी बनें, यह भावना वर्षों से देश में चली आ रही थी। भारत में कोई नेता ऐसा नहीं हुआ जिसे विपक्ष में देखते-देखते लोग भविष्य का प्रधानमंत्री मानने लगे और लोगों के दोनों हाथ ऊपर उठने लगे और यह दुआ करने लगे कि अटलजी भारत के प्रधानमंत्री बनें। अटलजी भारत के मन की इच्छा थे। जब कोई विषय जन-इच्छा का रूप ले लेते हैं और जनस्वर की लहरियां वायुमंडल में गुंजित होती हैं तो वह विषय स्वयं में फलीभूत होने की दिशा में बढ़ने लगती है। यह अध्यात्म का सत्य है और विज्ञान का सच भी। अटलजी और उनकी कार्यप्रणाली पर देश में अनेक शोधार्थी शोध कर रहे हैं। लता मंगेशकर के कंठ और सचिन तेन्दुलकर की दोनों कलाइयों ने जिस तरह से विश्व में नाम कमाया, ठीक उसी तरह अटलजी ने अपने वाणी के संस्कार से विश्व भर में अपनी छवि बनाई। वे वाणी के जादूगर हैं। उन्हें लोग दूरद्रष्टा भी मानते हैं। राजनीति में कल और उसके साथ आनेवाले सच को पहले भांप लेने की उनमें गजब क्षमता है। राजनीति में वे हिमालय की तरह अटूट खड़े रहे। बाबरी ढांचा गिरा पर उन्होंने पार्टी को नहीं गिरने दिया। सदन के भीतर तत्कालीन प्रधानमंत्री नरसिम्हारावजी को कहा था- ''विचार तो इस बात पर भी करना होगा कि आखिर ढांचा गिराने जैसी परिस्थितियां क्यों बनी? ये परिस्थिति कैसे बनीं? कौन जिम्मेदार है? मैं गलत को सही नहीं कह सकता पर मैं यह भी नहीं कह सकता कि जो कुछ हुआ उसके लिए कोई एक जिम्मेदार है।'' अटलजी चट्टान की तरह खड़े रहे। अटलजी का यही व्यक्तित्व सड़क और संसद दोनों जगह छाया रहता था।

आज भी सारा देश अटलजी के बारे में सोचता है तो उनके भाषण की गर्जना कानों में गूंजने लगती है। उनके भाषण के लय, छंद, अलंकार, उतार-चढ़ाव, भावभंगिमा, स्वर का ऊपर-नीचे होना, सब आंखों के सामने चलते-फिरते चलचित्र की तरह सहज आने लगता है।

अटलजी नीति हैं। अटलजी सिद्धांत हैं। अटलजी रीति-रिवाज हैं। अटलजी परिवार हैं। अटलजी सोमवार से लेकर रविवार हैं। अटलजी हर राशि के दोस्त हैं। अटलजी काबा को उतने ही पसंद करते हैं जितने काशी विश्नाथ को। अटलजी दीपक भी हैं और खिलते कमल भी। पं. नेहरू जी से लेकर मनमोहन सिंह तक को अपनी वाणी की बानगी से झकझोर देने वाले व्यक्तित्व का बिस्तर पर होना देश को असहज लग रहा है। वे राष्ट्रभक्ति के प्रतीक हैं। राष्ट्रवाद के पुरोधा हैं। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के मेघदूत हैं। वे संसदीय दल की बैठक में जब आते थे तो तालियां स्वतः बजने लगती थी। मैं भी सौभाग्यशाली हूं। वो जब तक संसद जाते रहे तब तक मुझे भी पार्टी ने संसद में भेज दिया था। अटलजी को हमने ही नहीं अनेकों ने निकट से देखा है। मुस्कुराते अटलजी के आते ही माहौल बदल जाता था। उनमें मौसम और फ़िज़ा को बदलने की ताकत थी। अटलजी संघर्ष का नाम है। अटलजी संयम का नाम है। अटलजी संगीत के सरोद हैं। अटलजी कालिदास के मेघदूत हैं। सूरदास के दोहे हैं। तुलसी की चौपाई हैं। कबीर के फ़कीरी के गीत हैं। उनमें मीरा जैसी कृष्णभक्ति और राष्ट्रभक्ति स्वतः देखी जा सकती है।

रहीम के दोहे और भूषण की कविताएं उनको देखकर लोग स्वतः पढ़ने लगते थे। वे भक्ति, शक्ति और विरक्ति के समुच्चय हैं।

आज भारतीय राजनीति को एक नहीं अनेक ऐसे व्यक्तित्व की महती आवश्यकता है क्योंकि वर्तमान भारतीय राजनीति संकीर्णता की मकड़जाल में फंसी हुई है। लोगों के सामने से देश गायब होता जा रहा है। अतः सबकी एक ही इच्छा है, अटलजी बिस्तर से उठें और सबसे कहें- ''चलो उतारें भारत मां की आरती।'' ■

(लेखक सांसद एवं मध्यप्रदेश भाजपा के अध्यक्ष रहे हैं)

कमल संदेश

भाजपा की आत्मा है राष्ट्रवाद और मिशन है सुशासन एवं सामाजिक सद्भाव : नितिन गडकरी

हमारे संवाददाता द्वारा

गत 14 दिसम्बर को इटानगर, अरूणाचल प्रदेश में भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने एक विशाल जनसभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि ''राष्ट्रवाद भाजपा की आत्मा है और सुशासन एवं सामाजिक सद्भावना प्रदान करना हमारा मिशन है।''

श्री गडकरी ने लोगों से सत्ता में लाने के लिए अपना वोट एनडीए को देने का आग्रह करते हुए कहा कि भाजपा देश की पूरी सामाजिक-आर्थिक स्थिति को बदल देने के लिए कृतसंकल्प है क्योंकि कांग्रेस के लम्बे समय से चले रहे शासन में इसकी विकृति चरम सीमा तक पहुंच गई है। उन्होंने कहा कि ''कांग्रेस भ्रष्टाचार और देश को लूटने का पर्याय बन चुकी है और उसने गरीबों और जरूरतमंद लोगों की अनदेखी कर उन्हें आर्थिक रूप से वंचित कर रखा है। उन्होंने आगे कहा कि आकाश (स्पैक्ट्रम घोटाला), जमीन (कॉमनवेल्थ खेल) और पाताल (कोयला घोटाला) विभिन्न जगहों पर प्रमुख घोटालों का राज कांग्रेस के शासन में हुआ है और यह पार्टी वंश-आधारित राजनीति का खेल खेल रही है तथा कांग्रेस ने आकाश से पाताल तक हर जगह आकाश में (स्पैक्ट्रम घोटाला), जमीन में (कामनवेल्थ खेल) और पाताल में (कोयला घोटाला) करके किसी भी स्थान को घोटालों से छोड़ा नहीं है।

कांग्रेस द्वारा कमजोर वर्गों की प्रगति और समृद्धि का दावा करने पर उन्होंने कटाक्ष करते हुए भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि देश में अनेकों किसानों की आत्महत्या करने की घटना आपके सामने है और साथ ही हम देख रहे हैं कि प्रतिदिन बेरोजगारों की संख्या निरंतर बढ़ती चली जा रही है।

श्री गडकरी ने कहा कि ''देश की वर्तमान हालत गलत आर्थिक नीतियों और कांग्रेस की बदइंतजामी के कारण पैदा हुई है। उन्होंने यह भी जोड़ा कि भाजपा-शासित राज्यों ने देश में जीडीपी की विकास दर बढ़ाने में अपना योगदान दिया है। उन्होंने कहा कि भाजपा पूर्वोत्तर राज्यों में इस क्षेत्र के समग्र विकास के लिए एक विजन डाक्युमेंट तैयार कर रही है जिसमें इंफ्रास्ट्रक्चर विकास, शिक्षा, बिजली और स्वास्थ्य क्षेत्रों पर ज्यादा से ज्यादा ध्यान दिया गया है।

उन्होंने आगे कहा कि ''हम अरूणाचल प्रदेश में प्रगति और विकास-आधारित राजनीति करना चाहते हैं और यदि भाजपा राज्य और केन्द्र में सत्ता प्राप्त करती है तो हम इंफ्रास्ट्रक्चर विकास पर अधिक बल देंगे जिससे राज्य में निवेश प्रवाहित होगा।''

उन्होंने आरोप लगाया कि केन्द्र का बहुत भारी निवेश होने के बावजूद भी अरूणाचल पिछड़ा क्षेत्र ही बना हुआ है। उन्होंने यह भी कहा कि राज्य सरकार जन-समर्थनकारी सरकार होने का दावा तो जरूर करती है, परन्तु वास्तव में वह सभी मोर्चों पर विकास करने में अत्यंत अक्षम रही है। ऐसे बहुत से क्षेत्र हैं जहां पर कोई भी समुचित सड़क कनेक्टिविटी, स्कूल, स्वास्थ्य सुविधाएं और यहां तक कि बुनियादी न्यूनतम सुविधाएं भी लोगों को देखने को नहीं मिलती हैं। ■

भाजपा सदैव सामाजिक न्याय के लिए लड़ती रही है

अरुण जेटली

भाजपा ने सदा ही सामाजिक न्याय की अवधारणा का समर्थन किया है। आरक्षण जैसे सकारात्मक कार्यों के माध्यम से सामाजिक न्याय गरीबी मिटाने का एक साधन है। ऐतिहासिक अन्याय के कारण जो लोग असमान स्थिति पर पहुंच गए थे, उन्हें बराबर के दर्जे पर लाने का यह एक संविधानिक साधन है। किन्तु, सामाजिक न्याय के उपायों का कार्यान्वयन एक संवैधानिक सद्भावना ढंग से कार्यान्वित करना आवश्यक है। भेदभावपूर्ण व्यवहार को मिटाने का प्रयास विपरीत भेदभाव की प्रक्रिया से नहीं किया जा सकता है। यही कारण है कि सुप्रीम कोर्ट ने कुछ दिशानिर्देश निर्धारित की हैं जिन्होंने अब कानून का रूप ले लिया है। एम. नटराजन के मामले में, सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट रूप से कहा है कि उच्चतम सीमा, क्रीमी लेयर की अवधारणा तथा पिछड़ापन, अपर्याप्त प्रतिनिधित्व और इसी प्रकार जैसे अन्य कारण एवं अनुच्छेद 335 के अन्तर्गत अन्य सभी प्रकार की प्रशासनिक कुशलताएं संवैधानिक आवश्यकताओं का हिस्सा है जिनके बिना अनुच्छेद 216 के अन्तर्गत बराबरी का ढांचा ध्वस्त होकर रह जाएगा। ये सभी आवश्यकताएं बराबरी के स्तर पर अपग्रेड हो गई जो संविधान के बुनियादी ढाचें का हिस्सा है।

इस संशोधन में प्रोन्नति पर आरक्षण की अवधारणा से निपटा नहीं गया है। इसमें परिणामी वरिष्ठता (सीनियरिटी) के मुद्दे से भी नहीं निपटा गया है। ये पहले से ही तय हो चुकी हैं। इसके तीन प्रमुख घटक हैं जिनका उल्लेख मैं अलग से करूंगा।

राज्यसभा में विपक्ष के नेता श्री अरुण जेटली, द्वारा संविधान संशोधन (117वां) बिल 2012 पर बहस के दौरान दिए गए उनके भाषण के संक्षिप्त बिन्दु

पहला, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की अधिसूचना अनुच्छेद 341 और 342 के अन्तर्गत की जाती है। इन व्यक्तियों को पिछड़ा माना जाता है ताकि उन्हें अनुच्छेद 16(4) और 16 (4ए) का लाभ मिल सके।

दूसरा, इस संशोधन मे सर्वोपरि प्रावधान के माध्यम से अनुच्छेद 335 के अन्तर्गत प्रावधानों को प्रोन्नति के आरक्षण को अनुपयुक्त बना दिया है। मुझे इस खण्ड पर गहन आपत्ति है। अनुच्छेद 335 में शामिल मानकों का प्रावधान रखा गया है जिन्हें एससी और एसटी पर लागू करना होगा। यदि अनुच्छेद 335 में यह प्रावधान लागू किया जाता है तो इससे कार्यकुशलता और सेवा के मनोबल पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा, असमानता का भाव पैदा होगा और संवैधानिक रूप से कमजोर पड़ जाएगा। अत:, मैं सरकार से अनुरोध करूंगा कि वह संशोधन के इस भाग को समाप्त कर दे।

तीसरे, प्रोन्नति में आरक्षण कुछ हद तक लीप फ्रागिंग (अर्थात् सीनियरिटी को फांद कर आगे जाने का प्रावधान रहता है) कि अनुमति है, इसलिए इसका प्रभाव यह होगा कि सेवाओं में कुछ जातियों की श्रेणियां भर जाएगी। अत: इस संशोधन में प्रावधान है कि ''राज्य की सेवाओं में एससी और एसटी के आरक्षण के प्रावधान की प्रतिशतता उस हद तक ही अपने राज्य में आरक्षण कर सकते हैं।'' इस प्रकार, 'रोक' (Cap) लगाने का प्रयास किया गया है। इस 'रोक' (Cap) की बाहरी सीमा में ही किसी राज्य के आचरण करने की अनुमति रहेगी। इस प्रकार, सभी या अधिकांश पदों पर किसी एक श्रेणी के कब्जा जमाए जाने का प्रश्न नहीं रहेगा। ■

छल-कपट की राजनीति

बलबीर पुंज

दशकों से, कांग्रेस ने बार-बार अपनी स्थिति मजबूत बनाने के लिए छल-कपट का सहारा लिया है, और सत्ता के भूखे राजनेताओं का इस पुरानी पार्टी के आगे नतमस्तक होना जारी है।

इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि कांग्रेसनीत संप्रग सरकार ने बहुब्रांड खुदरा व्यापार पर होने वाली बहस में अपने पक्ष में संख्या बल जुटाकर जीत हासिल कर ली। न ही उन सौदेबाजियों को लेकर कोई आश्चर्य होना चाहिए जो कांग्रेस पर्दे के पीछे द्रमुक जैसे अपने सहयोगी दलों से करने पर आमादा थी, जो अधिकतर विपक्षी दलों की तर्ज पर एफडीआई के प्रखर विरोधी थे।

इस प्रक्रिया में, किसी भी कीमत पर समर्थन प्राप्त करने की पुरानी कांग्रेसी परम्परा खुलकर सामने आयी। यहां पर एक उदाहरण है कि 1950 के दशक के दौरान जब कांग्रेस ने मद्रास विधानसभा चुनावों के बाद स्वयं को अल्पमत में पाया। उस समय, विपक्ष एकजुट था और उसने वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानी, टी प्रकाशम को अपना नेता चुन लिया जो शपथ लेने को तैयार थे। तब तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने राजाजी नाम से विख्यात, सी राजगोपालाचारी का, नामंकन की प्रक्रिया के द्वारा तत्कालीन राज्यपाल की मदद से प्रवेश सुनिश्चित कराने के लिए हस्तक्षेप किया। जल्द ही, राजनीति में दक्ष राजाजी ने विपक्ष को तोड़ने में सफलता पायी और नयी कांग्रेस की सरकार गठित की।

यह अलग बात है कि एक बार जब

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

दशकों से, कांग्रेस ने बार-बार अपनी स्थिति मजबूत बनाने के लिए छल-कपट का सहारा लिया है, और सत्ता के भूखे राजनेताओं का इस पुरानी पार्टी के आगे नतमस्तक होना जारी है।

इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि कांग्रेसनीत संप्रग सरकार ने बहुब्रांड खुदरा व्यापार पर होने वाली बहस में अपने पक्ष में संख्या बल जुटाकर जीत हासिल कर ली। न ही उन सौदेबाजियों को लेकर कोई आश्चर्य होना चाहिए जो कांग्रेस पर्दे के पीछे द्रमुक जैसे अपने सहयोगी दलों से करने पर आमादा थी, जो अधिकतर विपक्षी दलों की तर्ज पर एफडीआई के प्रखर विरोधी थे।

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

यह काम हो गया तो राजाजी स्वयं बाहर कर दिए गए और कांग्रेस के कटु आलोचक बन गए। उन्हें बदला लेने का मौका मिला जब उन्होंने द्रमुक के साथ मिलकर कांग्रेस को सत्ता से बाहर कर दिया। पार्टी तब से तमिलनाडु में सत्ता में नहीं आयी है।

अभी भी, इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि ऐसी दखलंदाजियां कुछ अन्य राज्यों में भी की गई। 1969 में, जब कांग्रेस में विभाजन होने के कारण इंदिरा गांधी के नेतृत्व में सरकार अल्पमत में आ गई, प्रधानमंत्री ने मोहन कुमारमंगलम जैसे साम्यवादियों को अपनी सरकार में प्रमुख पद देने की पेशकश करके भाकपा को अपने पक्ष में कर लिया।

1975 में, कांग्रेस एक कदम आगे बढ़ गयी। उसने अधिकतर विपक्षी नेताओं को जेल में डाल दिया और लोकसभा का कार्यकाल बढ़ाते हुए एवं प्रधानमंत्री के चारों ओर सुरक्षात्मक दीवार बनाते हुए सिलसिलेवार बहुत से कानून पारित कर डाले, जिससे कि उनका किसी भी दंडात्मक कार्रवाई से बचाना सम्भव हो सके यद्यपि उन्हें पहले से ही न्यायालय द्वारा आरोपित किया गया था। 1977 में, संसदीय चुनावों में कांग्रेस की करारी हार हुई। लेकिन इंदिरा गांधी के नेतृत्व में पार्टी ने नवनिर्मित जनता पार्टी के एक धड़े को यह लालच देकर अपने पक्ष में कर लिया कि इच्छुक नेता उसके समर्थन से प्रधानमंत्री बन सकता है। कुछ ही समय बाद कांग्रेस ने नये प्रधानमंत्री को समर्थन वापस लेकर चलता कर दिया। जनता पार्टी सरकार की विफलता से हताश होकर जनता ने पुनः कांग्रेस को सत्ता में ला दिया।

आंध्र प्रदेश में तेलुगुदेशम पार्टी द्वारा चुनाव में जीत हासिल कर कांग्रेस को बाहर का रास्ता दिखाने के मात्र दो वर्ष बाद वहां पर एनटी रामाराव की सरकार को अस्थिर करने के लिए भी वही युक्ति अपनाई गई। कांग्रेस ने 1989 में पुनः वही खेल खेला जब वह केन्द्र की सत्ता से बाहर हो गई।

1991 के आम चुनावों के बाद,

कांग्रेस सबसे ज्यादा सीटें जीती, मगर फिर भी उसके पास बहुमत नहीं था। मगर, जिस तरह से कांग्रेस के प्रधानमंत्री पीवी नरसिम्हा राव ने 1993 में खबरों के मुताबिक एक अविश्वास प्रस्ताव पर सांसदों की खरीद-फरोख्त की, वह संसदीय इतिहास में दर्ज है।

पिछली बार वर्ष 2008 में कांग्रेसनीत केन्द्र सरकार को अविश्वास प्रस्ताव का सामना करना पड़ा। उस समय पर भी जिस तरह से उसने स्वयं को बचाया वह जनता की स्मृतियों में दर्ज है। विपक्ष के सांसदों को रिश्वत देने का प्रयास सदन के पटल पर रखे गए नोटों के बंडलों से जाहिर हुआ।

इसके चलते वैधानिक रूप से यह सवाल उठ सकता है कि क्यों कुछ राजनेता, कांग्रेस द्वारा लालच देने व दग़ाबाजी किए जाने की युक्तियां अपनाए जाने के इतिहास से वाकिफ़ होने के बावजूद उसकी चालबाजियों का शिकार होते जा रहे हैं। उनकी राजनीतिक नैतिकता में व्याप्त छिद्र स्पष्ट हो जाते हैं जितनी बार वो मकड़जाल में फंसते हैं उनका उत्कर्ष व अपकर्ष एक ऐसी पद्धति को दर्शाता है जो यह रेखांकित करती है कि राजनीति में पाप भी भूत की तरह आते रहते हैं। यह बात, राजाजी से लेकर चरण सिंह और चन्द्रशेखर से लेकर मायावती और मुलायम सिंह यादव तक सत्य है- इनमें से सभी अपने अधिकारों के साथ बड़े राजनेता हैं जिन्होंने बहुब्रांड खुदरा व्यापार में एफडीआई लाए जाने के सरकार के प्रस्ताव का समर्थन किया। उन्हें मान लेना चाहिए कि इस सरकार को बख्शने सम्बंधी उनके निर्णय उनके राजनीतिक करियर को प्रभावित करेंगे। और भी महवपूर्ण यह है कि इससे राजनीतिक नेतृत्व के मिजाज़ पर भी सवाल उठेगा। इससे जनता के मस्तिष्क में उन्हें देश को

यह केवल एक इत्तेफाक नहीं है कि खुदरा क्षेत्र में एफडीआई पर मतदान में, आलोचकों को विभिन्न चालबाजियों द्वारा खामोश करते हुए, जीत हासिल करने के 48 घंटों के भीतर ही जमीन कांग्रेस के नीचे से खिसकती हुई दिखाई देती है। अमेरिकी विशाल खुदरा व्यापार कम्पनी वालमार्ट, जो खुदरा व्यापार में एफडीआई को लेकर बहस के केन्द्र में थी, ने भारत में अपने हितों की पूर्ति हेतु जोड़-तोड़ करने के लिए भारी मात्रा में पैसा खर्च करने की बात स्वीकार की है।

नेतृत्व करने हेतु पुनः चुनने की सम्भावनाओं को लेकर संदेह पैदा होगा।

इस मौके पर कुछ अन्य राजनेताओं के परस्पर विपरीत आचरण की याद दिलाना प्रासंगिक होगा। 1996 में, भाजपा नेता श्री अटल बिहारी वाजपेयी को केन्द्र में सरकार बनाने का निमंत्रण दिया गया क्योंकि भाजपा लोकसभा में सबसे बड़े दल के रूप में थी, मगर उसके पास पर्याप्त बहुमत नहीं था। मगर श्री वाजपेयी ने समर्थन के लिए अन्य राजनीतिक दलों को लुभाने का काम नहीं किया। इसके बजाए, उन्होंने खरीद फरोख्त का सहारा न लेते हुए त्यागपत्र देना बेहतर समझा।

वर्ष 1998 में, श्री अटल बिहारी वाजपेयी, गठबंधन सरकार का नेतृत्व कर पुनः सत्ता में आए। मगर जब उनकी सरकार ने एक गठबंधन सहयोगी को एक आपराधिक कार्यवाही से बचाने से इनकार कर दिया, तब उन्होंने अविश्वास प्रस्ताव का सामना करना बेहतर समझा। वो सिर्फ एक वोट से पराजित हुए जो कि इस बात का प्रमाण है कि उन्होंने सत्ता प्राप्ति के लिए राजनीति नैतिकता से समझौता करने से इनकार कर दिया था।

उसके बाद की घटनाएं दर्शाती हैं कि बाद में जो चुनाव हुए, श्री वाजपेयी तथा उनकी पार्टी का राजनीतिक कद बढ़ गया। श्री वाजपेयी को जनता का समर्थन मिला जिसके बल पर वो एक नए गठबंधन के साथ पुनः सत्ता में आए। उस गठबंधन का व्यापक राजनीतिक आधार जिसमें दक्षिण में द्रमुक तथा उत्तर में एनसी थी, इस तथ्य का प्रमाण था कि राजनीति में नैतिकता मायने रखती है। अतः, भाजपानीत राजग सरकार ने कांग्रेस द्वारा उसे तोड़ने के सभी प्रयासों को विफल करते हुए कार्यकाल पूरा किया।

यह केवल एक इत्तफाक नहीं है कि खुदरा क्षेत्र में एफडीआई पर मतदान में, आलोचकों को विभिन्न चालबाज़ियों द्वारा खामोश करते हुए, जीत हासिल करने के 48 घंटों के भीतर ही जमीन कांग्रेस के नीचे से खिसकती हुई दिखाई देती है। अमेरिकी विशाल खुदरा व्यापार कम्पनी वालमार्ट, जो खुदरा व्यापार में एफडीआई को लेकर बहस के केन्द्र में थी, ने भारत में अपने हितों की पूर्ति हेतु जोड़-तोड़ करने के लिए भारी मात्रा में पैसा खर्च करने की बात स्वीकार की है।

वालमार्ट द्वारा जोड़तोड़ के मामले की जांच रिपोर्ट का विस्फोटक होना निश्चित है। यह भी कि भारतीय बाजार में पहुंच बनाने में सफलता प्राप्त करने के लिए उसके द्वारा व्यय किए गए धन को लेकर वालमार्ट का बयान, और जिस तरह घोटालों से दाग़दार संप्रग सरकार ने वालमार्ट की पैरवी की है, दोनों चीज़ों को एक साथ जोड़कर देखा जाना चाहिए। इबारत दीवार पर लिखी है। कांग्रेसनीत सरकार की जीत का जीवन बहुत अल्प प्रतीत होता है। ■

हमारी मूलभूत सैद्धांतिक निष्ठाएं

भारतीय जनता पार्टी राजनीतिक क्षेत्र में सक्रिय, ध्येयनिष्ठा कार्यकर्ताओं का संगठित समूह है। यह अन्य दलों से भिन्न है। यह भिन्नता भाजपा की विशेषता है, जिसे नीतियों, कार्यक्रमों, आचरण और छोटे-बड़े कार्यक्रम के आयोजन में हर समय झलकना चाहिए।

- समाज परिवर्तन और निर्माण के बारे में तथा इसमें राजनैतिक हस्तक्षेप के बारे में भाजपा का अपना विशेष दृष्टिकोण है। यह दृष्टिकोण समृद्ध और सुचिन्तित वैचारिक विरासत के विस्तार का हिस्सा है।
- आजादी के बाद राष्ट्रवादी सोच के आधार पर भारतीय राष्ट्र के पुनर्निर्माण के औचार के रूप में भारतीय जनसंघ का अभ्युदय हुआ।
- भारत को एक सांस्कृतिक राष्ट्र मानने के बदले इसे राज्यों के संघ के रूप में प्रतिपादित करने वाली विदेशी सोच को कड़ी चुनौती मिली। पं. दीनदयाल उपाध्याय ने एकात्म मानववाद का राजनैतिक सिद्धांत उपस्थापित किया। यह सिद्धांत एकात्म मानववाद के सनातन भारतीय दर्शन का राजनैतिक प्रतिबिंब है, जिसमें विकास की अंतिम सीढ़ी पर खड़े मनुष्य का प्राथमिकता के आधार पर विचार किया जाता है।
- मानव जीवन की सूक्ष्म विशेषताओं के अनुरूप व्यक्ति, परिवार, दल, राष्ट्र का विचार और तदनुरूप विश्व-बन्दुधत्व का लक्ष्य एकात्म मानववाद की विशेषता है।
- एकात्म मानववाद मनुष्य का एकांगी विचार नहीं करता है और न वह व्यक्ति को केवल आर्थिक प्राणी मानता है। बेलगाम प्रतिस्पर्धा की जगह परस्पर अनुकूलता के आधार पर विकास का संदेश इसमें निहित है। एकात्म मानववाद एकक पूर्ण वैश्विक दर्शन पर आधारित सर्वांगीण विकास का राजनैतिक सिद्धांत है।
- पंथ, भाषा, जाति, लिंग के आधार पर भेदभाव किए बिना सबको आगे बढ़ने का समुचित अवसर प्रदान करना इस राजनैतिक सिद्धांत का ध्येय है।
- राष्ट्रीय एकात्मता, सकारात्मक पंथ निरपेक्षता, मूल्याधिष्ठित राजनीति, लोकतंत्र और गांधीजी के विचारों पर आधारित समतामूलक समाज की स्थापना भाजपा की पंचनिष्ठाएं हैं।
- सांस्कृतिक राष्ट्रवाद भाजपा के चिंतन का मुख्य आधार है। भाजपा स्वस्थ परम्पराओं के आधार पर राष्ट्र निर्माण की हिमायती है।
- स्वतंत्रता आंदोलन में विशिष्ट स्थान रखने वाले सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की धारा की झलक संविधान निर्माण से लेकर विभिन्न संस्थाओं के लिए पथ-प्रदर्शक सूक्तियों के निर्धारण में मिलती है और लोकसभा तथा विभिन्न विधानसभाओं में श्लोकों के रूप में जो मार्गदर्शन अंगीकार किए गये हैं वे सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की धारा के संकेत हैं।
- मगर आजादी मिलने के बाद सुनियोजित तरीके से तुष्टिकरण के प्रभाव में इस धारा को कमजोर करने की कोशिशें आरम्भ हुई। आर्थिक चिंतन में, योजनाओं के निर्धारण में, शैक्षणिक वातावरण में और सरकार के अन्य अंगों के नीति निर्धारण में विदेशी विचारधारों से प्रभावित और पोषित यह कोशिश जड़ जमाने लगी।
- राष्ट्र गौरव के प्रतीक चित्रों को, सांस्कृतिक धरोहरों को, राष्ट्रीय एकता के आधारभूत चित्रों को, राष्ट्रीय महापुरुषों को, प्राचीन ग्रंथों को उपेक्षित करने के इस सिलसिला को पहले जनसंघ की ओर से और बाद में भाजपा की ओर से सशक्त चुनौतियां मिलीं।
- राम मंदिर का निर्माण भी सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अस्मिता से जुड़ा एक ऐसा ही मुद्दा है। यह राष्ट्र गौरव का प्रतीक है।
- एकात्म मानववाद, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और पंचनिष्ठाएं भाजपा को अन्य राजनीतिक दलों से अलग पहचान प्रदान करती है। अनुकरणीय अतीत के आधार पर भविष्य का निर्माण करने के लिए मानव जीवन के मूलभूत तत्वों का विचार केवल भाजपा में ही है। ये मूलभूत सैद्धांतिक निष्ठाएं हमारे लिए पाथेय है।■

विचारधारा और विकास के गठजोड़ की जीत

–संजीव कुमार सिन्हा की रिपोर्ट

विजय तो विजय होती है, परन्तु जब गुजरात में यही विजय पूर्व-सुनिश्चित और पूर्व-निर्धारित बनकर आती है तो इस विजय के मायने स्वयं ही सुशासन और विकास को पुष्ट कर देते हैं। इस प्रकार की विजय में दो बातें विशेष रूप से अपना करिश्मा दिखाती हैं। एक, नेता का नेतृत्व और दूसरा, नेता के प्रति गहन विश्वास, जो लोकतंत्र को पुष्ट ही करता है। यही करिश्मा हमें गुजरात की विजय में देखने को मिलता है।

गुजरात में भारतीय जनता पार्टी ने नया कीर्तिमान कायम कर दिया है। गत 20 दिसम्बर को आए राज्य विधानसभा चुनाव के परिणाम के बाद भाजपा ने जहां लगातार पांचवीं बार जीत हासिल की वहीं पार्टी ने मुख्यमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में हैट्रिक जीत दर्ज की। इसके साथ ही, श्री मोदी को गुजरात में सबसे ज्यादा बार और सबसे अधिक समय तक मुख्यमंत्री बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

गत 13 दिसम्बर और 17 दिसम्बर को सम्पन्न हुए इस चुनाव में युवाओं और महिलाओं ने भारी संख्या में मतदान किया, जिसके चलते 70 फीसद से ज्यादा मतदान का रिकॉर्ड भी बना। राज्य में विकास का नारा देने वाली भाजपा को शहरी और ग्रामीण, दोनों क्षेत्रों लोगों का समर्थन मिला। पार्टी ने गुजरात में श्री नरेन्द्र मोदी की अगुआई में अपना अच्छा प्रदर्शन जारी रखते हुए 182 में से 115 सीटों पर जीत दर्ज कर स्पष्ट बहुमत हासिल कर लिया। कांग्रेस के प्रत्याशियों ने 61 सीटों पर जीत दर्ज की। कांग्रेस के साथ गठजोड़ में कुछ सीटों पर उम्मीदवार उतारने वाली राकांपा को दो सीटें मिलीं। जदयू ने भी एक सीट पर जीत हासिल की। भाजपा के वरिष्ठ नेता रहे श्री केशुभाई पटेल की गुजरात परिवर्तन पार्टी को महज 2 सीटें मिलीं। इनमें से एक सीट केशुभाई की ही है।

कांग्रेस को बड़ा झटका यह लगा कि उसके प्रदेश अध्यक्ष श्री अर्जुन मोढ़वाड़िया और कांग्रेस विधायक दल के नेता श्री शक्ति सिंह गोहिल दोनों

मोदी ने मां और केशुभाई से लिया आशीर्वाद

गुजरात के मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने विधानसभा चुनावों में अपनी और भाजपा की जीत के बाद गुजरात परिवर्तन पार्टी के अध्यक्ष श्री केशुभाई पटेल से मुलाकात कर उनका आशीर्वाद मांगा। श्री मोदी ने जीत के बाद अपनी मां हीरा बा से मिलकर उनका भी आशीर्वाद लिया।

अल्पसंख्यकों ने भी दिया नरेन्द्र मोदी का साथ

विरोधी दल श्री नरेंद्र मोदी पर अल्पसंख्यक विरोधी होने का चाहे जो अनर्गल आरोप लगाए, लेकिन विधानसभा चुनाव के मौजूदा नतीजों यह साबित हो गया है कि मुस्लिम बंधुओं ने बड़ी संख्या में श्री मोदी को अपना समर्थन दिया। कांग्रेस को गुजरात की ज्यादातर मुस्लिम बहुल सीटों पर भी मात खानी पड़ी है। जबकि अहमदाबाद, सूरत और वडोदरा की मुस्लिम आबादी वाली विधानसभा सीटों पर भाजपा ने अपना परचम लहरा दिया है।

विजय प

गुजरात ने विकास की राजनीति को तवज्जो दी है और व
है। लोगों ने गुजरात में नरेन्द्र भाई की अगुवाई में भाजपा क

गुजरात की जीत उत्साहवर्धक है। जाति और समुदाय से
का भी वोट मिला।

इस जीत ने दिखा दिया है कि गुजरात में मोदी को हराना
के क्षेत्र में आगे बढ़ा है। पड़ोसी राज्य में लोगों ने कांग्रेस को

जयललिता ने दी बधाई

तमिलनाडू की मुख्यमंत्री सुश्री जयललिता ने गुजरात में उ
ने श्री मोदी को फोन कर उन्हें बधाई दी।

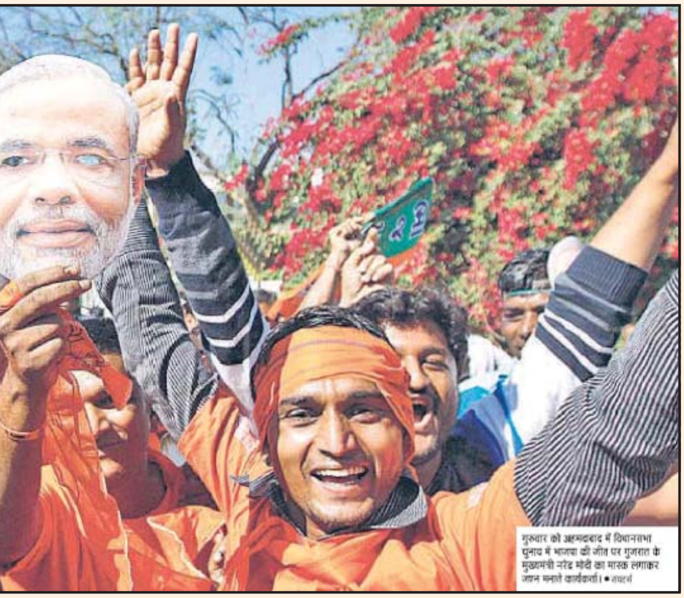

गुरुवार को अहमदाबाद में विधानसभा चुनाव में भाजपा की जीत पर गुजरात के मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी का मास्क लगाकर जश्न मनाते कार्यकर्ता। •

जीत का जश्न

र वक्तव्य...

हां की सरकार ने देश में रोल-मॉडल के रूप में प्रतिष्ठा हासिल की
ो राज्य के विकास के लिए चुना है।

– नितिन गडकरी, राष्ट्रीय अध्यक्ष, भाजपा

उठकर लोगों ने मतदान किया। हमें आदिवासियों और अल्पसंख्यकों

– अरुण जेटली, राज्यसभा में विपक्ष के नेता

नामुमकिन है। मोदी के नेतृत्व में गुजरात ऊर्जा, जल, उद्योग और कानून
हराया है और महाराष्ट्र के लोगों को भी कांग्रेस को हराना चाहिए।

– उद्धव ठाकरे, कार्यकारी अध्यक्ष, शिवसेना

ीत की हैट्रिक पर श्री नरेन्द्र मोदी को बधाई दी है। सुश्री जयललिता

अपनी-अपनी सीटें हार गए। श्री नरेन्द्र मोदी ने मणिनगर विधानसभा में अपनी निकटतम प्रतिद्वंद्वी कांग्रेस की श्रीमती श्वेता भट्ट को 86 हजार से ज्यादा मतों से पराजित किया। इस बार के चुनाव में सर्वाधिक बड़े अंतर से जीतने का रिकॉर्ड भाजपा की आनंदीबेन पटेल ने बनाया। भाजपा सरकार में मंत्री रही आनंदीबेन ने कांग्रेस के रमेश भाई पटेल को एक लाख दस हजार से अधिक वोटों से हराया।

श्री नरेंद्र मोदी के कुशल नेतृत्व की गुजरात और देश में ही नहीं अपितु विदेश में भी प्रशंसा हो रही है। इन दिनों जब देश की राजनीति में भ्रष्टाचार का महारोग फैल रहा है ऐसे में भ्रष्टाचार के मामले में श्री मोदी की बेदाग छवि उन्हें दूसरे नेताओं से अलग कर देती है। गुजरात ने वर्षों से 9 प्रतिशत विकास दर सुनिश्चित करके उल्लेखनीय प्रतिष्ठा प्राप्त की है। रोजगार, बिजली, कृषि और इन्फ्रास्ट्रक्चर के मामले में गुजरात देश के अन्य राज्यों से काफी आगे बढ़ा है।

गुजरात में कांग्रेस 22 सालों से सत्ता से दूर है। कांग्रेस के लिए गुजरात की हार एक बड़ा झटका है। राजनीतिक पंडित इस चुनाव को लोकसभा चुनाव का सेमीफाइनल मान रहे थे। कांग्रेस का प्रचार अभियान विफल रहा।

प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह, यूपीए अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी और कांग्रेस महासचिव श्री राहुल गांधी भाजपा के विजयरथ को रोकने में नाकाम रहे। इन तीनों नेताओं ने राज्य में जमकर प्रचार किया था और श्री मोदी पर निशाना साधते हुए उनके विकास के दावे को गलत ठहराया था। लेकिन राज्य के मतदाता उनके झांसे में नहीं आए। ■

भाजपा मुख्यालय में जीत का जश्न

गुजरात में भाजपा की जीत के साथ ही नई दिल्ली स्थित भाजपा का केन्द्रीय मुख्यालय जश्नमय हो गया। पार्टी के नेताओं ने अपने वक्तव्यों और टीवी चैनलों पर बहस में गुजरात में भाजपा की जीत का बखान किया वहीं भाजपा मुख्यालय पर कार्यकर्ताओं ने श्री मोदी के फोटो के साथ ढोल-नगाड़ों की थाप पर नृत्य किया और जमकर आतिशबाजी की। पार्टी मुख्यालय से सटे 9 अशोक रोड में सभी इलेक्ट्रॉनिक चैनलों ने अपने अस्थायी स्टूडियो बनाए हुए थे, जहां गुजरात चुनाव परिणाम सामने आने के साथ ही भाजपा के लगभग सभी प्रवक्ता और अन्य नेता टीवी चैनलों पर लाइव प्रस्तुति दे रहे थे।

यह गुजरात की जनता और भाजपा की जीत है : नरेन्द्र मोदी

गुजरात के लोगों ने फिर से एक बार अपना फैसला सुना दिया है, और इस बार काफी स्पष्ट रूप से फैसला किया है। वर्ष 2012 के गुजरात चुनावों ने दूसरे तमाम क्षुद्र मुद्दों को दरकिनार कर फिर से एक बार विकास की राजनीति और सुशासन पर अपनी मुहर लगा दी है। गुजरात की जनता ने हमारे प्रति जो स्नेह दर्शाया है, जो समर्थन दिया है और हमारी पार्टी तथा सरकार के प्रति जो अटूट विश्वास व्यक्त किया है इसके लिए मैं उनका आभार व्यक्त करता हूं। गुजरात के लोगों ने हमको प्रचंड बहुमत दिया है। मैं भरोसा देता हूं कि आपने हम पर जो विश्वास जताया है उसको बरकरार रखने में कोई कोरकसर बाकी नहीं रखी जाएगी।

खास तौर पर मैं अंतर्मन की गहराई से ईश्वर का धन्यवाद करता हूं, जिन्होंने हमें पिछले ११ वर्ष से गुजरात की जनता की सेवा करने के लिए अपार शक्ति और आशीर्वाद दिया है। प्रभु ने आने वाले वर्षों में भी गुजरात की सेवा करने का अवसर दिया, इसका हमें आनंद है।

यह गुजरात के लोगों की विजय है। यह गुजरात की नारी-शक्ति की भी विजय है जिसने अपनी आवाज बुलंद की है। यह हमारे युवाओं की भी विजय है जिन्होंने शुरुआत से ही इन चुनावों का बोझ अपने कंधों पर उठा लिया था। यह हमारे किसान भाइयों, कमजोर वर्ग के लोगों और वरिष्ठ नागरिकों की भी विजय है जो लगातार हमारे साथ खड़े रहे। यह विजय गुजरात के सर्वस्पर्शी, सर्वसमावेशक और सर्वांगीण विकास मॉडल तथा सुशासन की भी विजय है।

मेरे जैसे बिल्कुल सामान्य घर में जन्मे व्यक्ति को भी इतने सारे वर्षों तक समाज की सेवा करने का अवसर अमूल्य अवसर मिला, इसे मैं भारतीय लोकतंत्र की ताकत मानता हूं। मैं सामान्य लोगों के बीच रहकर पला-बढ़ा और उनकी शुभकामनाओं ने ही मुझे यहां तक पहुंचाया है और रात-दिन उनकी सेवा करने का पवित्र अवसर प्रदान किया है। जो युवा समाज की सेवा और राष्ट्र निर्माण के लिए अपना योगदान देना चाहते हैं वह गुजरात के इन चुनावों से काफी कुछ सीख सकते हैं।

सख्त परिश्रम के बजाये वंशवाद को ही ज्यादा महत्व मिलता देख कर कई बार युवा हताश हो जाते हैं और सोचते हैं कि क्या राजनीति के दरवाजे उनके लिए कभी खुलेंगे? गुजरात ने यह परंपरा बदल डाली है और दुनिया को दिखा दिया है कि अगर आपके मन में अपनी मातृभूमि की सेवा करने की लगन हो, चाहे जो हो जाए लेकिन मार्ग के अवरोध हटा देने का सामर्थ्य हो तो आपको अवसर अवश्य मिलेगा, चाहे आप किसी भी जाति या वंश के हों।

भाजपा कार्यकर्ता वास्तव में धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने एक टीम की तरह कार्य किया और कमल को उतना

गुजरात के चुनावों को लोग याद रखेंगे क्योंकि इस चुनाव ने भारत के लोगों का चुनाव के प्रति जो अभिगम था उसे आमूलचूल बदल दिया है। जातिवाद और वोट बैंक की राजनीति तथा 'फूट डालो-राज करो' जैसे विभाजनकारी मुद्दों को पूरी तरह से दरकिनार कर गुजरात के लोगों ने विकास के मुद्दे को प्राथमिकता दी है और इस तरह समग्र देश के लिए एक उदाहरण पेश किया है। आज समग्र गुजरात एकमत होकर खड़ा है और स्पष्ट संदेश दे रहा है कि आखिर विकास की राजनीति और सुशासन की ही विजय होगी।

खिलाने के लिए मेहनत की जितना वह पहले कभी नहीं खिला था।

यह विजय भाजपा के लाखों कार्यकर्ताओं के बलिदान और संकल्प की गाथा है।

मैं हमेशा से कहता आया हूं कि गुजरात के चुनावों को लोग याद रखेंगे क्योंकि इस चुनाव ने भारत के लोगों का चुनाव के प्रति जो अभिगम था उसे आमूलचूल बदल दिया है। जातिवाद और वोट बैंक की राजनीति तथा 'फूट डालो-राज करो' जैसे विभाजनकारी मुद्दों को पूरी तरह से दरकिनार कर गुजरात के लोगों ने विकास के मुद्दे को प्राथमिकता दी है और इस तरह समग्र देश के लिए एक उदाहरण पेश किया है। आज समग्र गुजरात एकमत होकर खड़ा है और स्पष्ट संदेश दे रहा है कि आखिर विकास की राजनीति और सुशासन की ही विजय होगी।

मित्रों, समय की मांग है कि छह करोड़ गुजराती अब एकजुट होकर खड़े रहें। हमारी सरकार ऐसी नहीं है कि जिन्होंने हमको वोट दिया सिर्फ उसी की परवाह करे। हम राज्य के प्रत्येक व्यक्ति की सुख-सुविधा के लिए चिंतित हैं। गुजरात की गौरवपूर्ण विकासयात्रा में प्रत्येक जात-पांत और वर्ग के लोगों का विकास और सफलता अत्यंत आवश्यक है। गरीबी और वंचितता व्यक्ति की जात-पांत देखकर नहीं आती और वोट बैंक की राजनीति के जातिवादी समीकरणों से इन समस्याओं का अंत नहीं होता। अगर हमें लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना है तो सुशासन और विकास के लाभ गरीबतम व्यक्ति को भी मिले, यह सुनिश्चित करना होगा। यही हमारा विजन रहा है और आने वाले वर्षों में हम इसी दिशा में प्रयत्न जारी रखेंगे। गुजरात की प्रत्येक सफलता और विकास के पीछे यहीं के लोगों का परिश्रम और पसीना है। हमने सिर्फ आपकी मेहनत को सपोर्ट किया है और एक ऐसा जनकेंद्रीय वातावरण तैयार किया है जिससे आप विकास करके सुख और समृद्धि हासिल कर सकें। कृषि क्षेत्र में गुजरात ने क्रांति की है और दूसरी हरित क्रांति का जनक बना है।

हमने गुजरात को उद्योगों के लिए अनुकूल राज्य बनाया है जिससे यहां बड़े पैमाने पर पूंजी निवेशों और औद्योगिक विकास द्वारा रोजगार का सृजन हो सके। बिजली, पानी और सड़क जैसी मूलभूत आवश्यकताएं पूरी करने पर गुजरात ने ध्यान केंद्रित किया है जिससे लोगों को प्राथमिक आवश्यकताओं की कमी महसूस न हो और इनकी वजह से आपका विकास अवरुद्ध न हो। गरीबी उन्मूलन योजनाओं के लाभ लाभार्थियों को सीधे मिल सकें, इसके लिए हमने बिचौलियों और एजेंटों को दूर कर दिया है। पिछले दशक में गुजरात में बड़ी संख्या में नवमध्यम वर्ग खड़ा हुआ है। यह एक ऐसा वर्ग है जिसे राज्य सरकार की आर्थिक नीतियों के कारण विकास के फल मिले हैं और जिनकी सुख-समृद्धि में बढ़ोतरी हुई है।

गुजरात के समाज में खड़े हुए इस नये वर्ग की सुख-सुविधाओं का ख्याल रखना हमारी जिम्मेदारी है। उनके जीवन-गुणवत्ता में जो सुधार हुआ है वह उन्हीं की सख्त मेहनत का परिणाम है। यही गुजरात का खमीर है और यही गुजरात का जोश है जो हमेशा समय की कसौटी पर खरा उतरा है। बारंबार मुझ से पूछा जाता है कि मोदी जी, आने वाले वर्षों में गुजरात के विकास के लिए आपका क्या आयोजन है? आने वाले वर्षों में हम गुजरात के लोगों की सेवा जारी रखेंगे और आप सभी के लिए प्रगति और विकास के अवसर खड़े करते रहेंगे। हम एक ऐसे गुजरात का निर्माण करेंगे जहां सिर्फ आप ही नहीं बल्कि आपकी आने वाली पीढ़ियां भी सुखमय जीवन व्यतीत कर सकें। अब भव्य और दिव्य गुजरात के निर्माण की यात्रा का प्रारंभ हुआ है।

मित्रों, आप देखना, आगे और प्रगति, विकास, सुख और समृद्धि गुजरात का इंतजार कर रहे हैं। ■

समाचार पत्रों की संपादकीय टिप्पणी

गुजरात विधानसभा चुनाव में श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा की शानदार जीत पर हिंदी के प्रमुख समाचार-पत्रों ने अपनी संपादकीय टिप्पणी में इसे ऐतिहासिक करार देते हुए श्री मोदी के कुशल नेतृत्व की प्रशंसा की। यहां प्रस्तुत हैं मुख्य अंश : -

नवभारत टाइम्स

नरेन्द्र मोदी फिलहाल भारत में ऐसे अकेले राजनेता हैं, जिसने ऐसी पॉपुलिस्ट टोटकों को परे रखकर पिछले दस सालों में अपनी छवि सिर्फ अपनी प्रशासनिक क्षमता और विकास कार्यों के इर्दगिर्द बनाने का प्रयास किया। ... राष्ट्रीय जनमत का एक हिस्सा अपने नेता में वे सारे गुण चाहता है, जो उसे नरेंद्र मोदी में नजर आते हैं। भविष्य को लेकर साफ नजरिया, बिना लाग-लपेट की राजनीति, प्रशासन के मामले में बेदाग़ ट्रैक रिकॉर्ड और रोक-टोक की परवाह किए बग़ैर अपने रास्ते पर आगे बढ़ने की हिम्मत।

दैनिक जागरण

लघु आम चुनाव सरीखे बन गए गुजरात विधानसभा चुनाव के नतीजे भले ही 2014 के लोकसभा चुनाव की कोई झलक न दिखा पा रहे हों, लेकिन लगातार तीसरी बार जीत हासिल करने के कारण नरेन्द्र मोदी एक नए अवतार के रूप में सामने आ गए हैं। .... यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि मोदी के नेतृत्व में भाजपा ने सभी वर्गों के वोट तो हासिल किए ही, उन क्षेत्रों में भी जीत हासिल की जो मुस्लिम बहुल माने जाते हैं। इनमें से कुछ क्षेत्र तो ऐसे हैं जहां मुस्लिम मतदाता निर्णायक भूमिका में हैं। इसका सीधा मतलब है कि गुजरात के मुसलमानों को डराने-बहकाने के तौर-तरीके कारगर सिद्ध नहीं हुए।

अमर उजाला

नरेन्द्र मोदी ने साबित किया है कि लगातार दस वर्षों के शासन के बावजूद प्रदेश के लोगों का उन पर विश्वास कायम है। उनके खिलाफ न तो गुजरात के क्षेत्रीय समीकरणों ने काम किया और न ही उनकी पिछली छवि को उभारने की कोशिश ने।

दैनिक ट्रिब्यून

गुजरात विधानसभा चुनाव का बिगुल बजने के बाद से ही राजनीतिक पंडितों की दिलचस्पी का एकमात्र मुद्दा यह था कि मोदी के नेतृत्व में भाजपा को लगातार तीसरा जनादेश पिछली बार के मुकाबले ज्यादा सीटों के साथ मिलेगा या कम सीटों के साथ। इसके बावजूद कांग्रेस अगर सार्वजनिक रूप से अपनी जीत के दावे करते घूम रहे थे तो उसे उनकी राजनीतिक मजबूरी ही माना जा सकता है। मोदी की हैट्रिक भले आशानुरूप न हो लेकिन इससे इस जीत का महत्व कम नहीं हो जाता।

दैनिक भास्कर

भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में नरेन्द्र मोदी उन चंद नेताओं में शुमार हो गए हैं, जिनका अपने गढ़ में कोई मुकाबला नहीं है।

गुजरात विधानसभा चुनाव परिणाम पर समाचार-पत्रों की सुर्खियां

गुजरात में भाजपा का परचम - *दैनिक ट्रिब्यून*

मोदी की हैट्रिक - *हिन्दुस्तान*

गढ़ पर मोदी की पताका - *नेशनल दुनिया*

मोदी की आंधी... - *नवभारत टाइम्स*

गुजरात में नमो नमो नमो - *दैनिक जागरण*

मोदी की हैट्रिक - *राष्ट्रीय सहारा*

हैट्रिक नरेन्द्र भाई मोदी - *अमर उजाला*

एकछत्र क्षत्रप - *दैनिक भास्कर*

मोदी ने बनायी जीत की हैट्रिक - *पायनियर*

गुजरात में फिर मोदी - *जनसत्ता*

मोदी महाविजयी - *पंजाब केसरी*

आप चाहें, ना चाहें... नमो तो आ गए - *राजस्थान पत्रिका*

पॉयनियर (हिन्दी) की संपादकीय टिप्पणी

मोदी का जादू एक बार फिर

गुजरात में विकास की राजनीति को बढ़ावा

गुजरात विधानसभा चुनाव में भाजपा की शानदार विजय जनता द्वारा घृणा की राजनीति अस्वीकार करने तथा विकास राजनीति को समर्थन देने की प्रतीक है। यह राज्य के चुनावों में मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी की तीसरी शानदार विजय है। इसमें उन्होंने पूर्णत: राज्य में जनता के लिए सरकार द्वारा किये विकास कार्यों के आधार पर चुनाव लड़ा। दूसरी ओर कांग्रेस का अभियान कमजोर और फीका था जिसमें उसने मुख्यमंत्री पर निशाना लगाना जारी रखा तथा विकास का अपना मॉडल पेश किया। कांग्रेस का दुर्भाग्य है कि गुजरात के मतदाताओं ने श्री मोदी के एक दशक के शासन में विकास के फल चखे थे और उसे इस सतही आलोचना से गुमराह करना मुश्किल था जो मुख्यमंत्री के प्रतिद्वंद्वी उनके खिलाफ लगातार करते रहते थे। कहने का यह अर्थ नहीं कि राज्य की जनसंख्या के हर तबके को विकास का लाभ मिला है क्योंकि बहुत से लोग ऐसे हैं जो लगातार विकास की लहर से बाहर रहे हैं। लेकिन लगता है उन्होंने भी समझ लिया है कि उनकी ऐसी स्थिति जानबूझकर मोदी नीत सरकार द्वारा नहीं की गई है, लेकिन यह किसी स्तर पर प्रशासनिक विफलता है। इसके साथ ही उनका विश्वास है कि आने वाले महीनों में भाजपा इसे संबोधित करेगी। चुनाव के पहले अनेक सप्ताहों से नरेन्द्र मोदी के विरोधी लगातार यह संदेश प्रसारित कर रहे थे कि श्री मोदी ध्रुवीकरण करने वाली शक्ति हैं और उन्होंने राज्य के मुसलमानों को एकदम किनारे कर दिया है। इन विरोधियों में कांग्रेस एवं तथाकथित नागरिक अधिकार एक्टिविस्ट शामिल हैं जिन्होंने मुख्यमंत्री की शैतान जैसी छवि पेश करना अपना कैरियर बना रखा है। हालांकि, कांग्रेस 2007 के अपने अनुभव से भयभीत थी जिसमें उसने 2002 की हिंसा या मोदी नीत सरकार द्वारा अल्पसंख्यकों के 'उत्पीड़न' का मामला उठाया था, लेकिन यह तथ्य अपनी जगह है कि उसके कार्यकर्ता पूरे चुनाव अभियान के दौरान जमीनी स्तर पर मुख्यमंत्री के खिलाफ जहर उगलते रहे। परिणामों ने संभवत: संकेत किया है कि कांग्रेस की यह रणनीति भी विफल हो गयी है।

कांग्रेस का अभियान कमजोर और फीका था जिसमें उसने मुख्यमंत्री पर निशाना लगाना जारी रखा तथा विकास का अपना मॉडल पेश किया। कांग्रेस का दुर्भाग्य है कि गुजरात के मतदाताओं ने श्री मोदी के एक दशक के शासन में विकास के फल चखे थे और उसे इस सतही आलोचना से गुमराह करना मुश्किल था जो मुख्यमंत्री के प्रतिद्वंद्वी उनके खिलाफ लगातार करते रहते थे।

भाजपा अल्पसंख्यक वोटों में भी काफी सीमा तक सेंध लगाने में सफल रही है जिससे स्पष्ट संकेत मिलते हैं कि मोटे तौर से राज्य के मुसलमान मुख्यमंत्री के आलोचकों द्वारा प्रचारित घृणा अभियान से निराश हो गये थे। वे अतीत को पीछे छोड़ कर आगे बढ़ना चाहते थे। इसके साथ ही खतरनाक समझे जाने वाले सत्ता- विरोधी रुझान या केशूभाई पटेल आयाम ने भी कांग्रेस को लाभ नहीं पहुंचाया। भाजपा ने सौराष्ट्र में अपना समर्थन आधार बनाये रखा है जहां पटेल समुदाय के काफी लोग रहते हैं और उनके मुख्यमंत्री के धुर विरोधी केशूभाई पटेल के पक्ष में चले जाने की आशा थी। लेकिन जैसा कि मतों में हिस्से तथा सीटों से स्पष्ट संकेत मिलता है यहां पार्टी का प्रदर्शन 2007 की तुलना में खराब नहीं रहा।

अपनी आदत के अनुसार ही कांग्रेस दीवाल की लिखावट पढ़ने से इनकार कर रही है और वह यह तथ्य स्वीकार करने को तैयार नहीं है कि सुश्री सोनिया गांधी या श्री राहुल गांधी राज्य में पार्टी की किस्मत सुधारने में कोई ज्यादा योगदान नहीं कर सके। उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों और इसके पहले बिहार विधानसभा चुनावों की तरह कांग्रेस के दोनों सबसे बड़े नेता गुजरात में भी पार्टी को निराशाजनक पराजय से नहीं बचा सके। पार्टी के वरिष्ठ नेताओं को सम्मानपूर्ण तरीके से पराजय स्वीकार करनी चाहिये और इसके लिये दयनीय व्याख्यायें नहीं पेश करनी चाहिये। ■

गुजरात विधानसभा चुनाव परिणाम पर समाचार-पत्रों में देश के जाने-माने स्तम्भकारों ने लेख लिखे। अपने लेख में इन्होंने मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के कुशल नेतृत्व में भाजपा की शानदार जीत पर टिप्पणी करते हुए लिखा कि यह विकास की राजनीति की जीत है। हम इन सभी लेखों के मुख्य अंश प्रकाशित कर रहे हैं :

गुजरात चुनाव से कांग्रेस सबक ले

जवाहरलाल कौल

कांग्रेस ने चुनाव प्रचार के आखिरी दौर में मतदाताओं को याद दिलाया था कि उन्हें गांधी और मोदी के बीच किसी एक को चुनना चाहिए। लेकिन गांधी के घर पोरबंदर में भी नरेंद्र मोदी का ही प्रतिनिधि जीत गया तो सवाल उठता है कि क्या गुजरात गांधी को सचमुच भूल गया है! गुजराती धर्म संस्कृति के मामले में भावुक होता है, लेकिन जीवन के और पहलुओं में नितांत व्यावहारिक भी। लिहाजा गांधी भी उन्हें याद है और यह भी याद है कि जो गांधी की दुहाई देते हैं वे गांधी के कितने भक्त हैं। कांग्रेस आखिर मतदाता को क्या विकल्प दे रही थी मोदी के बदले? वाघेला, जो अपने आप को कांग्रेस की ओर से कप्तान मान रहे थे, लेकिन जनता की नजर में भाजपा के ही पूर्व नेता और मुख्यमंत्री थे। वाघेला के अतिरिक्त तीसरे विकल्प थे केशुभाई पटेल, लेकिन वे भी कुछ समय पहले तक भाजपा और संघ के ही प्रतिनिधि थे।

प्रतिस्पर्धा तीन ऐसे नेताओं में थी जो एक ही गुरुकुल में पढ़े और पले थे। ऐसे में व्यावहारिकता का तकाजा था कि तीनों में से उसे चुनो जो काम कर सके और करवा सके।

अक्सर यह माना जाता है कि जब लोग किसी बात पर उत्तेजित हों या नाराज हों और बदलाव चाहते हों तो बड़ी संख्या में वोट देने निकलते हैं, अन्यथा चुनाव को सामान्य घटना मानकर गम्भीरता से नहीं लेते। लोगों में आक्रोश या उत्सुकता किस बात पर हो सकती थी, इस पर अधिक बहस नहीं हुई। मीडिया मान बैठा कि नाराज़गी सत्ता पक्ष से ही हो सकती है, लेकिन यह भी तो हो सकता है कि लोग सचमुच मानने लगे हों कि गुजरात के साथ भेदभाव हो रहा है और जैसा नरेंद्र मोदी कहते रहे हैं कि यह मुकाबला छह करोड़ गुजरातियों और केंद्र सरकार के बीच है।

नरेंद्र मोदी ने अगर गुजरातियों में यह भावना पैदा कर दी है कि गुजरात पीड़ित है और पीड़ा का कारण केंद्र सरकार और कांग्रेस है तो इसके सारे कारण कांग्रेस ने ही जुटाए हैं। यह अहसास दिया जाता रहा कि केंद्र सरकार और गुजरात के बीच जंग जैसी स्थिति है। जब कोई वर्ग या राज्य अपने आपको पीड़ित मानने लगता है तो बाकी सारे तर्क निरर्थक हो जाते हैं। इसलिए नतीजे जैसे आए वे कतई आश्चर्यजनक नहीं हैं।

इसमें कांग्रेस पार्टी के लिए कुछ तो सीखने लायक है। कांग्रेस ने इस बार यह तो महसूस किया कि हिंदुत्व या गोधरा कांड के बाद की घटनाओं को प्रचार का माध्यम न बनाए। उसके रणनीतिकारों ने बताया होगा कि हमें मोदी के एजेंडे में अपने आप को नहीं फंसाना चाहिए। इस मामले में गुजरातियों को प्रभावित करना आसान नहीं होगा। इससे ध्रुवीकरण तेज ही होगा, जिसका लाभ केवल नरेंद्र मोदी को होगा। इसलिए वे भी विकास के मामले पर ही अपना प्रचार आधारित करने लगे। लेकिन यह भी तो मोदी का ही एजेंडा था।

> **गुजरात में विकास हुआ है इस बात को सब जानते हैं और यह भी सच है कि इस विकास के लिए श्रेय जितना मोदी को दिया जाना होगा, उससे अधिक गुजरातियों के स्वभाव और कार्यकुशलता को मिलना चाहिए। लेकिन किसी भी मुकाबले में श्रेय सेनापति को जाता ही है।**

मुसलमानों में भी एक बड़ा वर्ग ऐसा है जो अकेला पड़ने के कारण उकता गया है और किसी तरह आर्थिक मुख्यधारा में आना चाहता है। वह मुखर नहीं हो सकता है क्योंकि उसे उन प्रभावशाली मुस्लिम नेताओं के कोपभाजन बनने का खतरा सता रहा है जो संप्रदाय की राजनीति करते हैं या जिनकी प्रासंगिकता उसी में है। वे अगर मतदान के माध्यम से अपनी बात कह गए हों तो किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए। इसलिए कांग्रेस को आगे भी राजनीति करनी है तो दो बातों पर ध्यान देना होगा।

राजनीति को केवल मोदी विरोध पर ही आधारित न रखे वरना उस माहौल से कांग्रेस कभी भी नहीं निकल सकती

जिसमें उसकी जगह बहुत सीमित रहेगी। पार्टी को लोकतांत्रिक तरीके से बढ़ने दें ताकि कोई जमीनी नेता पैदा हो। आयातित या बिना जमीन के नेता कांग्रेस को मुकाबले में नहीं ला पाएंगे। गुजरात में विकास हुआ है इस बात को सब जानते हैं और यह भी सच है कि इस विकास के लिए श्रेय जितना मोदी को दिया जाना होगा, उससे अधिक गुजरातियों के स्वभाव और कार्यकुशलता को मिलना चाहिए। लेकिन किसी भी मुकाबले में श्रेय सेनापति को जाता ही है।

मोदी की शानदार जीत हुई है तो मीडिया इस बहस में लग जाएगा कि वे भाजपा के लिए प्रधानमंत्री पद के दावेदार होंगे कि नहीं। अगले लोकसभा चुनावों में मुकाबला मोदी बनाम राहुल गांधी होगा कि नहीं। लेकिन अगर इस बहस से हटकर केवल गुजरात की बात करें तो मोदी के लिए यह आवश्यक होगा कि वे अपने अधूरे कामों को पूरा करने का प्रयास करें।

गुजरात में इसके बाद दंगे नहीं होंगे या सांप्रदायिकता जड़ से मिट जाएगी, यह दावा अव्यावहारिक है क्योंकि इस राज्य में राम जन्मभूमि आंदोलन से ही सांप्रदायिक टकराव का आरम्भ नहीं हुआ। इसका इतिहास इससे बहुत पुराना है। उसे जड़ से मिटाने के लिए शायद दशकों लगें, लेकिन विकास के रास्ते में सहयात्री बनने से उस लक्ष्य तक पहुंचा जा सकता है, यह उम्मीद तो की ही जा सकती है। ■

(दैनिक भास्कर से साभार)

गुजरात के मतदाता जातिवाद के चक्कर में नहीं फंसे

वेद प्रताप वैदिक

कांग्रेस बेहद खुश है कि उसने अपनी सीटें नहीं खोईं। यह खुशी भी क्या खुशी है? इस खुशी का कारण भी अगर केशुभाई और उनके संघी व भाजपाई साथी ही हैं तो धन्य है यह कांग्रेस! जिस रफ्तार से पिछले तीन चुनावों में कांग्रेस ने अपनी सीटें बढ़ाई हैं, उसी रफ्तार से उसकी प्रगति होती रही तो वह गुजरात में अगले तीस साल के बाद ही सरकार बना पाएगी। जिस यथास्थिति पर कांग्रेस संतोष प्रकट कर रही है, वह स्थिति तो नहीं, दुर्दशा है। पार्टी के अध्यक्ष, संसदीय दल के नेता और अन्य महत्वपूर्ण पदाधिकारी ही नहीं, कुछ महिलाएं, जिन्हें उकसाकर खड़ा किया गया था, वे भी हार गईं। गुजरात के मतदाता न तो जातिवाद के चक्कर में फंसे, न उन्होंने क्षेत्रवाद को तरजीह दी और न ही वे सांप्रदायिक प्रचार के शिकार बने। नरेंद्र मोदी के विरुद्ध गड़े मुर्दे उखाड़ने वाले लोग अभी भी उसी काम में लगे हैं, जो वे दस साल पहले कर रहे थे। उनका मानना है कि मोदी की जीत लोकतंत्र की अवहेलना है, संविधान का अपमान है, बर्बरता की विजय है। वे भूल गए कि इस बार गुजरात की जनता ने अपूर्व संख्या में मतदान किया। यदि मोदी की नीतियां जन-विरोधी होतीं तो नए युवा और महिला मतदाता उन्हें हरा देते। लेकिन मोदी की जीत यह सिद्ध कर रही है कि पिछले दस साल में पैदा हुए नए मतदाता भी उनके साथ हैं। सब मतदाता यह भी देख रहे थे कि जिस मोदी को हमारे कुछ नेता, अखबार और टीवी चैनल रावण के रंग से पोतना चाह रहे थे, उसी मोदी को अमेरिकी पत्रिका 'टाइम' हीरो बता रही थी, उसी मोदी से मिलने के लिए विदेशी राजदूतों की कतार लगी हुई थी, उसी मोदी के गुजरात में हमारे श्रेष्ठ उद्योगपति और फिल्मी सितारे दौड़े चले जा रहे थे।■ *(दैनिक भास्कर से साभार)*

जीता विकास मॉडल

राजीव कुमार, अर्थशास्त्री व फिक्की के पूर्व जनरल सेक्रेटरी

देखिये, मोदी की जीत बहुत ही सकारात्मक संकेत है। सबसे पहली बात तो गुजरात में एक स्थिरता बनी रहेगी। उद्योग जगत में और तेजी आएगी। गुजरात के लोगों का विश्वास मजबूत होगा। मोदी की विकास की सफल राजनीति के बाद कहा जाने लगा है कि अब दिल्ली की राजनीति भी स्वयं को बदले। यह इस जीत का सकारात्मक पक्ष है। चूंकि अब वक्त आ गया है, जब यूपीए सरकार को भी कारगर कदम उठाने होंगे, क्योंकि मोदी के मॉडल को वह दरकिनार नहीं कर सकती। उसे 'पॉपुलिज्म' का रास्ता छोड़कर विकास को ध्यान में रखते हुए कदम उठाने होंगे।

मोदी की जीत का नकारात्मक पक्ष यह भी हो सकता है कि इस यूपीए ने विकास को तवज्जो देने की बजाय सिर्फ वोट बैंक को लुभाने की नीति पर ही ज्यादा ध्यान दिया, तो नुकसान होगा। दूसरा पहलू यह है कि मोदी की इस विश्वासी जीत के बाद इनके विरोधी दलों द्वारा उन्हें बांधे रखने के लिए सामाजिक तौर पर नकारात्मक स्थितियां भी बनाई जा सकती हैं। वैसे, कुल मिलाकर मोदी का अपनी नीतियों के बल पर जीतना देश के लिए अच्छा संकेत है। मोदी ने दिखा दिया है कि अच्छी आर्थिक नीतियां अच्छी राजनीति में तब्दील की जा सकती हैं। यही नीतियां नवीन पटनायक, शिवराज सिंह चौहान ने दोहराई, तो उन्हें मतदाताओं का समर्थन मिला। तो अगर मोदी द्वारा शुरू किया गया विकास की राजनीति का

ट्रेंड या विकास मॉडल अन्य राज्यों में भी अपनाया जाता है, तो इससे देश की राजनीति में बदलाव आ सकता है।

मोदी ने विकास को ध्यान में रखा और विकास की राजनीति कहीं भी स्वीकार्य है। वो बेशक एक 'पीएम मैटीरियल' हैं। उन्होंने गुजरात में भी कर दिखाया है। एक बेहतर प्रशासन उन्होंने वहां दिया है, जो कि एक सरकार की बड़ी जिम्मेदारी होती है। प्रशासनिक सुधारों के जरिये उन्होंने गुजरात की स्थितियां बदल दी हैं। ■

मिलकर आगे बढ़ें

फिरोज बख्त अहमद, स्तंभकार व मौलाना आजाद के परिजन

गुजरात चुनाव के परिणाम अप्रत्याशित नहीं हैं। मोदी का तीसरी बार भरी बहुमत से जीतना विकास की राजनीति का प्रतिफल है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि मोदी के नेतृत्व में गुजरात का चहुंमुखी विकास हुआ है। यह विकास सभी जाति, वर्ग और सम्प्रदाय के लिए हुआ है। जहां तक गुजरात दंगों की बात है, तो उस घटना को कोई भी जायज नहीं करार दे सकता, लेकिन मुसलमानों को उसे एक भयानक सपना मानकर भूल जाना चाहिए। और मोदी के नेतृत्व में आगे बढ़ना चाहिए।

गुजरात में मुसलमान अब काफी समृद्ध हुए हैं, इसके पीछे मोदी और उनकी सरकार का हाथ है। जो लोग कहते हैं कि गुजरात में मुसलमान पिस गए हैं, वो गलत हैं, बल्कि मैं तो यह कहूंगा कि गुजरात का मुसलमानों का अभूतपूर्व विकास हुआ है। मोदी ने गुजरात में मुसलमान संतुष्ट और समृद्ध हैं। 2002 के बाद गुजरात में कोई साम्प्रदायिक दंगा नहीं हुआ है। मुसलमानों को चाहिए कि वे पुरानी रंजिश को भुलाकर एक अच्छी सोच के साथ मोदी के नेतृत्व में आगे बढ़ें। शेक्सपियर मैकबैथ ने लिखा है कि 'जो हो चुका है उस पर ज्यादा आंसू बहाने से कोई फायदा नहीं है। जो लोग बचे हैं, उनकी मदद करनी चाहिए।'

अगर मोदी भी अपनी ओर से थोड़ी-सी सदाशयता दिखाएं, वे मुसलमानों के मसीहा बन सकते हैं। बड़े-बड़े मुल्कों में कहीं कहीं इस तरह की अनहोनी हो जाया करती है, जिन पर आंसू बहाने से कोई फायदा नहीं है। अगर अल्पसंख्यक मोदी से मिलेंगे, तो मोदी जरूर उनके सुनहरे भविष्य के साथी बनेंगे। वैसे अगर मोदी प्रधानमंत्री बनते हैं, तो देश को उनके अनुभव और ईमानदारी का बहुत फायदा होगा। ■ *(रा.पत्रिका से साभार)*

गुजरात ने विकास की राजनीति को तवज्जो दी : भाजपा

गुजरात में भाजपा के प्रदर्शन की प्रशंसा करते हुए भाजपा ने इसका श्रेय वहां के मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को दिया। पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने इसके लिए गुजरात की जनता का आभार जताया।

श्री गडकरी ने कहा कि गुजरात ने विकास की राजनीति को तवज्जो दी है और वहां की सरकार ने देश में रोल मॉडल के रूप में प्रतिष्ठा हासिल की है। लोगों ने गुजरात में नरेन्द्र भाई की अगुवाई में भाजपा को राज्य के विकास के लिए चुना है। श्री गडकरी ने कहा कि कांग्रेस ने चुनाव को सम्प्रदायिक रंग देने की कोशिश की लेकिन समाज के सभी वर्ग के लोगों ने भाजपा की जीत में भूमिका निभाई जिसके लिए मैं गुजरात के लोगों को धन्यवाद देता हूं।

राज्य सभा में विपक्ष के नेता श्री अरुण जेटली ने मीडिया से कहा, 'कांग्रेस को गुजरात में काफी आत्मचिंतन करने की जरूरत है। नरेन्द्र मोदी को पार्टी और कार्यकर्ताओं का काफी समर्थन है। यह एक शानदार जीत है और उन्होंने लगातार तीसरी बार जीत दर्ज की है। श्री जेटली गुजरात और हिमाचल प्रदेश में चुनाव अभियान में सक्रिय रूप से जुड़े हुए थे। उन्होंने कहा, 'गुजरात में कोई सत्ता विरोधी लहर नहीं थी। कांग्रेस ने भाजपा को नुकसान पहुंचाने का प्रयास किया और एक अन्य पार्टी (केशुभाई पटेल की) मौजूदगी के बावजूद हमारा प्रदर्शन काफी अच्छा रहा।' यह पूछे जाने पर कि क्या इस जीत ने 2014 में मोदी की पार्टी के प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार की दावेदारी मजबूत की है, श्री जेटली ने कहा कि अभी 2012 चुनाव के परिणाम सामने आए हैं। उन्होंने कहा कि यह मीडिया के लिए दिलचस्प विषय हो सकता है लेकिन हम इस विषय पर उपयुक्त समय पर ही कोई निर्णय करेंगे। हिमाचल प्रदेश में पार्टी की पराजय के बारे में पूछे जाने पर श्री जेटली ने कहा कि प्रेम कुमार धूमल ने अच्छा प्रदर्शन किया और हार का अंतर काफी कम था। उन्होंने कहा कि इस बार हिमाचल में काफी बागी उम्मीदवार थे। यदि संगठन में लोग एकजुट होते, तो हम जीत दर्ज करते, यदि पार्टी गुजरात की तरह एकजुट होती तो परिणाम कुछ और होता। 20 दिसम्बर 2012 को भाजपा संसदीय बोर्ड की बैठक हुई जिसमें गुजरात और हिमाचल के चुनाव परिणामों की चर्चा की गई। पार्टी ने गुजरात की जनता व श्री मोदी को बधाई दी और हिमाचल की हार की समीक्षा का निर्णय किया है। ■

गुजरात का संदेश

✍ प्रशांत मिश्र

गुजरात में नरेंद्र मोदी ने तीसरी बार शानदार जनादेश लेकर यह साबित कर दिया है कि अगर लक्ष्य स्पष्ट हो, साधन ठीक हों तो विजय चरण चूमती ही है। गुजरात के इन विधानसभा चुनावों में न तो 2002 के दंगों की टीस बची थी, न ही हिंदुत्व की प्रयोगशाला कहे जाने वाले गुजरात में सांप्रदायिकता जैसा कोई भावनात्मक मुद्दा ही था। मोदी ने विकास की जो रेखा खींची और गुजराती अस्मिता को जगाया उससे राज्य की जनता को लगा कि वह मुख्यमंत्री नहीं, बल्कि देश का भावी प्रधानमंत्री चुनने जा रही है। मोदी पूरे चुनाव में वास्तव में विपक्षियों से नहीं, बल्कि इन्हीं अपेक्षाओं या अपनी खींची हुई रेखा से लड़ रहे थे। गुजरात प्रदेश के जन्म के बाद से सर्वाधिक लंबे समय तक मुख्यमंत्री बने रहने का रिकार्ड तो उनके नाम पहले ही हो चुका था, लेकिन अब सबसे ज्यादा बार जीतने का ताज भी उनके सिर है।

मोदी की सीटों की संख्या को लेकर राजनीतिक पंडित या प्रेक्षक चाहे जो भी अनुमान लगा रहे हों, लेकिन खुद उन्होंने कभी इसे बहुत तूल नहीं दिया। गुजरात चुनाव कवरेज के दौरान मैंने बार-बार मोदी से सीटों की संख्या पर लग रहे अनुमानों पर पूछा तो हर बार उनका जवाब यही था कि आगे बढ़ेंगे। चारों तरफ से चल रही विरोधी हवाओं के बीच भी मोदी के इस आत्मविश्वास की जमीन कितनी मजबूत थी, इसका सुबूत नतीजों ने भी दे दिया। लिहाज़ा गुजरात के ताजा जनादेश के तूफानी तेवर तीसरी बार भी बरकरार हैं। इसमें चकाचौंध की चमक केवल इसलिए कम है, क्योंकि हमारी आंखें मोदी से ऐसे चमत्कार देखने की आदी हो चुकी हैं। पिछले दो चुनाव से बिल्कुल अलग इस बार उनके पास भावनात्मक रूप से उकसाने वाला कोई मुद्दा नहीं था। 2007 के चुनाव में उन्होंने आधे से ज्यादा विधायकों को बदलने का जोखिम भी लिया था, लेकिन इस बार भितरघात के भय से उन्हें भी अपनी राजनीतिक शैली, साहस की जगह संयम को महत्व देना पड़ा। इसी बदली राजनीतिक शैली के चलते उन्होंने भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व को पहले की तुलना में थोड़ा महत्व भी दिया। वोटिंग मशीन से निकले नतीजे के तुरंत बाद इस समय यह सोचना थोड़ा मुश्किल लग रहा है कि गुजरात के सत्ता शिखर में खड़े रहने के लिए मोदी को भी तमाम बाधाओं का सामना करना पड़ा है। इस बार मोदी के सामने दो नई चुनौतियां थीं। केशू बापा एक अलग पार्टी के नेता के तौर पर सामने थे। वे कम से कम सौराष्ट्र में भाजपा का भविष्य खराब कर सकते थे, और इसके लिए उन्हें बहुत बड़े समर्थन की जरूरत भी नहीं थी। कल्याण सिंह बहुत कम समर्थन पाकर भी उत्तर प्रदेश में भाजपा का बहुत बड़ा नुकसान कर चुके हैं। मोदी को दूसरी बड़ी चुनौती कांग्रेस की बदली हुई रणनीति से मिल रही थी।

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

केवल अच्छी रणनीति से ही मोदी को हराना नामुमकिन है। कांग्रेस ने मोदी के गुजरात के विकास के दावे में दरार पैदा करने की कोशिश जरूर की, लेकिन जनता ने उसे स्वीकार नहीं किया। गुजरात के विकास की वास्तविकता पर अब कोई बड़ी बहस संभव नहीं है। इस नए जनादेश की सकारात्मक व्याख्या यह हो सकती है कि गुजरात की जनता ने बची-खुची कुछ राजनीतिक समस्याओं को नकारा नहीं है, बल्कि यह माना है कि मोदी ही विकास की इन कमजोरियों को दूर कर सकते हैं।

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

केंद्र के कांग्रेसी शासन में तमाम काले धब्बे भले ही हों, लेकिन इस बार गुजरात चुनाव की कांग्रेसी रणनीति काफी समझदारी भरी दिखी। पिछले चुनाव में मौत का सौदागर वाली घातक गलती से सबक लेकर इस बार कांग्रेस ने सांप्रदायिकता के सवाल को ही समाप्त कर दिया था। इसी राजनीति की वजह से ही शायद कांग्रेस ने पिछली बार की तुलना में इस बार एक तिहाई से भी कम अल्पसंख्यक उम्मीदवार मैदान में उतारे थे। उसके घोषणापत्र में गुजरात दंगों का जिक्र तक नहीं था। कांग्रेस ने मोदी को हिंदुत्व और राष्ट्रवाद के मुद्दे पर घेरने से पूरी तरह परहेज किया। मोदी ने सर क्रीक और मियां अहमद पटेल का जिक्र जरूर किया, लेकिन उसकी धार, उनके आक्रमण पिछली बार की तरह तेज नहीं थे। प्रधानमंत्री की

एक सभा के कुछ अंशों को मोदी ने उठाकर कांग्रेस को इस मैदान में लाने की कोशिश जरूर की, लेकिन कांग्रेस इस बहकावे में नहीं आई। संभवत: कांग्रेस पर दबाव इतना था कि पूरे केंद्रीय नेतृत्व ने अभियान में मोदी का नाम तक लेने में कंजूसी बरती। भारत के इतिहास में शायद पहली बार ऐसा हुआ है कि एक प्रादेशिक आम चुनाव के पूरे प्रचार अभियान में कांग्रेस के पोस्टरों से पूरा नेहरू-गांधी परिवार और यहां तक कि पूरा केंद्रीय नेतृत्व गायब था। केंद्रीय नेतृत्व ने गुजरात जाकर प्रचार की केवल खानापूरी ही की। कांग्रेस की कोशिश थी कि पूरे चुनाव में उपकेंद्रीय मुद्दे हावी रहें जिससे निपटने में शंकर सिंह वाघेला, अर्जुन मोडवाडिया और शक्ति सिंह गोहिल जैसे नेता ही समर्थ रहें। निर्णायक रूप से पराजित होने के बावजूद कांग्रेस की रणनीति में कोई बड़ी गलती नहीं दिखी, लेकिन मोदी के सामने कोई कद्दावर नेतृत्व न होना उन्हें भारी पड़ा। जाहिर है कि केवल अच्छी रणनीति से ही मोदी को हराना नामुमकिन है। कांग्रेस ने मोदी के गुजरात के विकास के दावे में दरार पैदा करने की कोशिश जरूर की, लेकिन जनता ने उसे स्वीकार नहीं किया। गुजरात के विकास की वास्तविकता पर अब कोई बड़ी बहस संभव नहीं है। इस नए जनादेश की सकारात्मक व्याख्या यह हो सकती है कि गुजरात की जनता ने बची-खुची कुछ राजनीतिक समस्याओं को नकारा नहीं है, बल्कि यह माना है कि मोदी ही विकास की इन कमजोरियों को दूर कर सकते हैं।

भावनात्मक मुद्दों के भाव और एक दशक से अधिक एकछत्र शासन के बाद भी मोदी की शानदार सफलता उनके सुशासन की प्रामाणिक पुष्टि भी करती है। राजनीतिक दांवपेंचों की आड़ में इस सकारात्मक संदेश को छिपाया नहीं जा सकता। हकीकत यह है कि मोदी ने गुजराती मानस के भिन्न वर्गों के साथ ही कहीं न कहीं समग्र गुजराती समुदाय को अपने शासन से संतोष दिया है।

भावनात्मक मुद्दों के भाव और एक दशक से अधिक एकछत्र शासन के बाद भी मोदी की शानदार सफलता उनके सुशासन की प्रामाणिक पुष्टि भी करती है। राजनीतिक दांवपेंचों की आड़ में इस सकारात्मक संदेश को छिपाया नहीं जा सकता। हकीकत यह है कि मोदी ने गुजराती मानस के भिन्न वर्गों के साथ ही कहीं न कहीं समग्र गुजराती समुदाय को अपने शासन से संतोष दिया है। मोदी की जिस कार्यशैली में उनके विरोधियों में तानाशाही दिखती है, गुजराती मानस उसमें दृढ़ता, स्पष्टता और प्रतिबद्धता देखता है। पूरे गुजरात में घूमने के बाद मुझे कई बार ऐसा लगा कि एक आम गुजराती मोदी की विशिष्ट कार्यप्रणाली को ठीक मानता है।

मोदी की जिस कार्यशैली में उनके विरोधियों में तानाशाही दिखती है, गुजराती मानस उसमें दृढ़ता, स्पष्टता और प्रतिबद्धता देखता है। पूरे गुजरात में घूमने के बाद मुझे कई बार ऐसा लगा कि एक आम गुजराती मोदी की विशिष्ट कार्यप्रणाली को ठीक मानता है। आम धारणा है कि मोदी सबको कम समय देते हैं, लेकिन वह उपलब्ध तो हैं। इतना ही नहीं समय देने के पहले संबंधित मसले की फाइल को पूरी तरह समझ लेते हैं। तुरंत निर्णय लेते हैं और उसे समयबद्ध ढंग से लागू करते हैं। यहां तक कि कई गुजराती मुस्लिम नेता भी इस सच्चाई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार कर चुके हैं।

मोदी का विकास अभियान अभी अधूरा हो सकता है, लेकिन विधि व्यवस्था के मामले में उनकी उपलब्धियों को विवाद का विषय नहीं बनाया जा सकता। सच्चाई यह है कि कांग्रेसी सरकारों के समय गुजरात सांप्रदायिक ही नहीं जातिवादी दंगों से भी त्रस्त हो चुका था। नव निर्माण आंदोलन का विस्फोट भी यहीं हुआ था। व्यापार और उद्योग का केंद्र होने के नाते गुजरात के लिए कर्फ्यू रहित जीवन की अहमियत बहुत होती है।

इसके अलावा मोदी ने अपने प्रदेश के हर क्षेत्र और हर वर्ग को आशा का एक नया आधार भी दिया है। मसलन इस चुनाव में मोदी ने युवाओं और महिलाओं में अपनी विशेष लोकप्रियता को सिद्ध किया है। पूरे भारत में भाजपा के पारंपरिक मतदाताओं के बीच मोदी सबसे लोकप्रिय है।

यदि यह कहा जाए कि अखिल भारतीय पहचान वाले वह एकमात्र मुख्यमंत्री हैं तो गलत नहीं है। गुजरात के जनादेश ने भाजपा की केंद्रीय राजनीति में मोदी के महत्व को मान लिया है। लोकतांत्रिक राजनीति में किसी भी नेता की यह सबसे बड़ी पूंजी होती है। और इस जनादेश ने मोदी को इस पूंजी का मालिक बना दिया है। ■

(दैनिक जागरण से साभार)

जनता द्वारा दिया गया जनादेश स्वीकार : प्रेम कुमार धूमल

–संवाददाता द्वारा

हिमाचल प्रदेश में मतदाताओं ने हर पांच साल बाद सत्ता परिवर्तन का इतिहास इस बार भी दोहरा दिया। प्रदेश में इस बार जनादेश कांग्रेस के पक्ष में गया। राज्य विधानसभा की 68 सीटों के लिये हुए चुनाव में कांग्रेस ने 36 सीटें जीत कर पूर्ण बहुमत प्राप्त किया, जबकि भाजपा के हिस्से में 26 सीटें आई। बहुमत के लिए राज्य में कम से कम 35 सीटों की जरूरत थी। भाजपा से टूट कर बनी 'हिमाचल लोकहित पार्टी' केवल एक सीट पर सिमट कर रह गई है। पांच सीटों पर निर्दलीय उम्मीदवारों को सफलता मिली है। सीपीआई और सीपीएम सहित, बहुजन समाज पार्टी, तृणमूल कांग्रेस और एनसीपी जैसी पार्टियां विधानसभा चुनाव में अपना खाता भी नहीं खोल पाई।

मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल हमीरपुर और पूर्व मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह शिमला ग्रामीण सीट से चुनाव जीते। प्रदेश सरकार के चार मंत्री–उद्योग मंत्री किशन कपूर, खाद्य एवं आपूर्ति मंत्री रमेश धवाला, बागवानी मंत्री नरेंद्र बरागटा और वन मंत्री खीमी राम को चुनाव में हार का मुंह देखना पड़ा।

उधर कांग्रेस में भी कई दिग्गज अपनी जीत दर्ज नहीं करा पाए। इनमें पूर्व विधानसभा अध्यक्ष गंगूराम मुसाफिर, पूर्व मंत्री रामलाल ठाकुर व रंगीला राम राव, अखिल भारतीय महिला कांग्रेस की अध्यक्षा अनीता वर्मा और चुनाव से पहले वीरभद्र सिंह के साथ समझौता करके कांग्रेस में आए पूर्व मंत्री मेजर विजय सिंह मनकोटिया जैसे नेता शामिल हैं।

प्रदेश कांग्रेस विधायक दल की नेता विद्या स्टोक्स, पूर्व प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ठाकुर कौल सिंह और पूर्व मंत्री कुलदीप कुमार तथा पूर्व मुख्य संसदीय सचिव मुकेश अग्निहोत्री चुनाव जीत गए, जबकि लगातार चार बार चुनाव जीत चुके पूर्व मुख्य संसदीय सचिव हर्षवर्धन चौहान और कुलदीप सिंह पठानिया जीत पाने में नाकाम रहे।

"जनता का फैसला तो जनता ही भली-भांति जान सकती है, जनता द्वारा दिए गए जनादेश का स्वागत है।"

धूमल सरकार के मंत्रियों में लोक निर्माण मंत्री ठाकुर गुलाब सिंह, शिक्षा मंत्री ईश्वरदास धीमान, सिंचाई एवं जनस्वास्थ्य मंत्री रविंद्र सिंह रवि, समाज कल्याण मंत्री सरवीण चौधरी, पंचायती राज मंत्री जयराम ठाकुर और परिवहन मंत्री महेंद्र सिंह चुनाव जीत गए। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष सतपाल सत्ती भी चुनाव जीतने में कामयाब रहे।

मुख्यमंत्री श्री प्रेम कुमार धूमल ने स्थानीय सर्किट हाउस में पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा कि चुनाव परिणामों से स्पष्ट होता है कि लोगों ने कांग्रेस के पक्ष में जनादेश दिया है। प्रदेश की जनता ने कांग्रेस के पक्ष में मतदान किया है हम इसे स्वीकार करते हैं। लोगों को कैसी सरकार चाहिए इसका निर्णय लोग ही लोकतंत्र में करते हैं। हमारी सेवा में कमी रही होगी, हमें आशा है कि आने वाली सरकार बढिया सेवा देगी। आने वाली सरकार को उन्होंने शुभकामनाएं दीं।

उन्होंने कहा कि जनता का फैसला तो जनता ही भली-भांति जान सकती है, जनता द्वारा दिए गए जनादेश का स्वागत है। मुख्यमंत्री ने प्रदेश के मतदाताओं का धन्यवाद किया तथा जीतने वाले सभी प्रत्याशियों को बधाई दी। ■

नरेंद्र सिंह तोमर बने प्रदेश भाजपा अध्यक्ष

–संवाददाता द्वारा

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव श्री नरेंद्र सिंह तोमर निर्विरोध प्रदेश भाजपा अध्यक्ष निर्वाचित हुए। गौरतलब है कि इससे पूर्व श्री तोमर सन् 2006 से 2009 तक मध्यप्रदेश भाजपाध्यक्ष का दायित्व संभाल चुके हैं।

गत 15 दिसम्बर को उनके इकलौते नामजदगी पर्चे को भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री व केन्द्रीय पर्यवेक्षक श्री रविशंकर प्रसाद ने जांच में सही पाने के बाद उनके अध्यक्ष चुने जाने की घोषणा कर दी।

चुनाव की औपचारिकता पूरी होने के बाद श्री प्रसाद ने कहा कि निवर्तमान अध्यक्ष श्री प्रभात झा कुशल संगठक हैं, उन्होंने पार्टी को मजबूत बनाने में प्रभावी भूमिका निभाई है।

गत 16 दिसम्बर को भोपाल में भाजपा के प्रदेश परिषद के सम्मेलन में केन्द्रीय पर्यवेक्षक श्री रविशंकर प्रसाद ने मध्य प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष के पद पर श्री नरेन्द्र सिंह तोमर के निर्विरोध निर्वाचित किए जाने की घोषणा करते हुए मध्यप्रदेश के संगठन को देश में सर्वोत्कृष्ट बताया। श्री प्रसाद ने कहा कि आने वाले 2013 में विधानसभा चुनाव में शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में सरकार का गठन होगा और 2014 में मध्यप्रदेश से लोकसभा चुनाव में अधिक संख्या में प्रतिनिधि चुने जाएंगे। नवनिर्वाचित प्रदेश अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह तोमर ने उत्तर प्रदेश जैसे जटिल प्रदेश में भाजपा का नगरीय निकायों में परचम फहराया है। वे मध्यप्रदेश में मिशन-2013 को सफल बनाने में सफल होंगे।

राष्ट्रीय महासचिव श्री अनंत कुमार ने कहा कि राज्य में शिवराज सिंह चौहान, नरेंद्र सिंह तोमर और प्रभात झा की त्रिमूर्ति मिशन 2013 को सफल बनाएगी और लोकसभा चुनाव 2014 में प्रदेश से शानदार परिणाम देकर केन्द्र में भाजपा को सत्ता में पहुंचाने के लिए असरदार प्रयास करेगी। उन्होंने कहा कि देश में भाजपा ही एकमात्र दल है जहां लोकतंत्र चरितार्थ हो रहा है। सामान्य कार्यकर्ता राष्ट्रीय अध्यक्ष के पद पर चुना जा सकता है। अन्य दलों में वंश परंपरा या आजीवन कुर्सी पर बैठे रहने की परम्पराएं हैं जो लोकतंत्र की मर्यादा के विपरीत है। भाजपा में समन्वय की दृष्टि से परिवर्तन होते रहते हैं। पद से मुक्त होने के बाद भी यहां कोई दायित्व और कार्य से मुक्त नहीं होता, यही कारण है कि भाजपा में अनवरत जीवंतता बनी है और इसका देश में अभूतपूर्व विस्तार हुआ है।

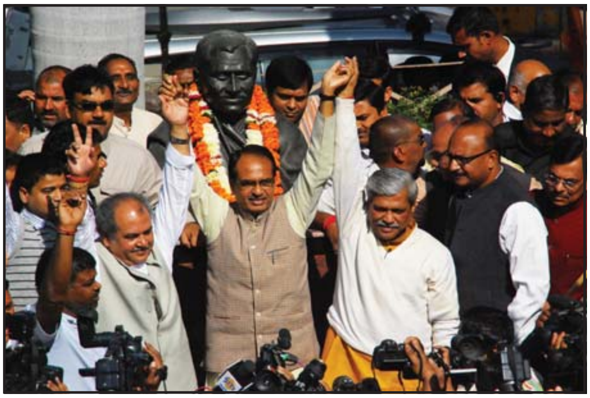

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने श्री प्रभात झा के कार्यकाल की सराहना की और साथ ही कहा कि उन्हें मध्यप्रदेश में सेवा से मुक्त नहीं किया जाएगा। मध्यप्रदेश को देश का सर्वोत्कृष्ट राज्य बनाने के लिए प्रदेश सरकार ने जो सपना संजोया है उसे पूरा करने में प्रदेश संगठन और कार्यकताओं का इसी तरह सहयोग मिलता रहेगा।

निवर्तमान प्रदेश अध्यक्ष श्री प्रभात झा ने अपनी सफलता का श्रेय कार्यकर्ताओं को दिया और दोहराया कि उनके व संगठन के सामने मिशन 2013 है और शिवराज के नेतृत्व में फिर सरकार बनाना है। पार्टी के नवनिर्वाचित प्रदेश अध्यक्ष नरेन्द्रसिंह तोमर ने पूर्व प्रधानमंत्री व पार्टी के प्रेरणस्त्रोत श्री अटलबिहारी वाजपेयी की पंक्तियां को उद्धृत करते हुए कहा, ''सत्ता में पद आयेगा, पद जायेगा, पार्टी में पद आयेगा और पद जायेगा, लेकिन कार्यकर्ता का पद कोई छीन नहीं सकता है। हमें हर स्थिति में कार्यकर्ता भाव को जीवंत बनाए रखना है।''

उन्होंने कांग्रेस को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि 2003 में जब भाजपा की सरकार बनी तो मिथक फैलाया गया, उन सारे मिथकों को तोड़कर भाजपा ने पांच वर्ष शासन किया और दोबारा सरकार में आई। तीसरी बार 2013 में शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में सरकार का गठन होगा और लोकसभा चुनाव-2014 में कार्यकर्ता 2009 के चुनाव परिणामों से बेहतर चुनाव परिणाम देंगे।

इस मौके पर प्रसाद ने भाजपा की राष्ट्रीय परिषद के लिए निर्वाचित 29 सदस्यों की भी घोषणा की। ■

नहीं रहे उत्तराखंड के पहले मुख्यमंत्री नित्यानंद स्वामी

वरिष्ठ भाजपा नेता व उत्तराखंड के पहले मुख्यमंत्री श्री नित्यानंद स्वामी नहीं रहे। गत 12 दिसम्बर को सुबह सीएमआइ अस्पताल में नौ बजकर 35 मिनट पर उन्होंने अंतिम सास ली। वह 84 वर्ष के थे। 27 दिसंबर 1928 को नारनौल हरियाणा, में जन्मे श्री नित्यानंद स्वामी का अधिकांश जीवन देहरादून में ही बीता। उनके पिता वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून में तैनात थे। उनका विवाह चंद्रकाता से हुआ, दोनों की चार पुत्रियां हैं। दिवंगत स्वामी एक कुशल व्यक्तित्व के धनी थे। यही कारण रहा कि उन्हें 1950 में डीएवी कालेज के अध्यक्ष चुने गए। 50-60 के दशक में वह जनसंघ के सक्रिय कार्यकर्ता रहे और विभिन्न मजदूर यूनियन के अध्यक्ष भी रहे। उन्होंने वकालत को अपना पेशा बनाया।

वह 9 नवंबर 2000 को उत्तर प्रदेश से पृथक राज्य उत्तराखंड के पहले मुख्यमंत्री बने और उनका कुल कार्यकाल 11 महीने 20 दिन रहा। इससे पहले वह वर्ष 1991 में उत्तर प्रदेश में विधान परिषद के उपसभापति रहे और 1992 में सभापति बने। सक्रिय राजनीतिक जीवन के आरंभ में दिवंगत स्वामी वर्ष 1969 में अविभाजित उत्तर प्रदेश राज्य में देहरादून विधानसभा क्षेत्र से विधान परिषद से सदस्य निर्वाचित हुए।

भाजपा अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी का शोक संदेश

उत्तराखण्ड के पूर्व मुख्यमंत्री एवं पार्टी के वरिष्ठ नेता श्री नित्यानन्द स्वामी के निधन का दु:खद समाचार मिला। मैं उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। श्री नित्यानन्द स्वामी उत्तराखण्ड राज्य बनाने वाले आंदोलन के एक प्रमुख सिपाही थे। नवनिर्मित पृथक उत्तराखण्ड प्रदेश के पहले मुख्यमंत्री के रूप में दायित्व संभालने का सौभाग्य उनको मिला।

मुख्यमंत्री के रूप में उनकी दूरदर्शी नीतियों से उत्तराखण्ड आज प्रगति की राह पर है। अविभाजित उत्तर प्रदेश में भी उन्होंने अनेक जिम्मेदारियों का निर्वाह बखूबी किया। जिस - जिस पद वह रहे उस पर उन्होंने अपनी अमिट छाप छोड़ी।

मैं परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करने की प्रार्थना करते हुए उनके परिजनों और सहयोगियों को यह असीम दु:ख सहने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करता हूं। ■

सितार के जादूगर पं. रविशंकर का निधन

भारतीय संगीत को विश्व में लोकप्रियता के शिखर पर पहुंचा कर सम्मानजनक स्थान दिलाने वाले प्रख्यात सितार विशारद पं. रविशंकर का 11 दिसम्बर तड़के साढ़े 4 बजे (स्थानीय समय) अमरीका के सान डियागो में 92 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वह कुछ समय से सांस की तकलीफ से पीड़ित थे। देश के तीन सर्वोच्च पुरस्कारों पद्म भूषण (1967), पद्म विभूषण (1981) एवं भारत रत्न (1999) से सम्मानित 'पंडित जी' ने संगीत में योगदान के लिए तीन ग्रामी पुरस्कारों के अलावा हजारों अन्य पुरस्कार जीते थे।

वाराणसी में 7 अप्रैल 1920 को जन्मे रवींद्र शंकर चौधरी को उनका संक्षिप्त नाम 'रवि' उनके पिता श्याम शंकर ने दिया था। बचपन से ही संगीत के माहौल में पले-बढ़े पं. रविशंकर ने एक नर्तक के रूप में कला जगत में प्रवेश किया परन्तु सितार से बेहद लगाव होने के कारण वह 1938 में 18 वर्ष की आयु में उस्ताद अलाऊद्दीन खान के पास सितार सीखने मैहर पहुंच गए और स्वयं को उनकी सेवा में समर्पित कर दिया।

अनेक रागों के जन्मदाता पं. रविशंकर ने अपने संगीत के असंख्य एलबमों के अलावा अनेक महान क्लासिक फिल्मों 'धरती के लाल' (1946), 'नीचा नगर' (1946), ऋषिकेश मुखर्जी निर्देशित 'अनुराधा' (1960), 'गोदान' (1963) और गुलजार निर्देशित 'मीरा' (1979) आदि में अपने मधुर संगीत से सुगम शास्त्रीय संगीत को असीम लोकप्रियता दिलवाई।

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने सितारवादक भारतरत्न पंडित रविशंकर के देहावसान पर गहरा शोक व्यक्त किया। अपने शोक संदेश में श्री गडकरी ने कहा पं. रविशंकर का निधन भारतीय शास्त्रीय संगीत की एक बड़ी क्षति है। ■